राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में प्रेसनोट,नोटिस,वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-9879141480
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई,उत्तरप्रदेश,बिहार,राजस्थान,मध्यप्रदेश,उत्तरांचल,उत्तराखंड,दिल्ली,हरियाणा में प्रकाशित

सुरत–गुजरात,संस्करण शनिवार 16 दिसंबर 2023 वर्ष–6,अंक–321 पृष्ठ–08 मूल्य–01रूपये

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

राजस्थान के नए मुख्यमंत्री बने भजनलाल शर्मा

-दीया और बैरवा ने ली डिप्टी सीएम पद की शपथ

भजनलाल राज्य के पहले सीएम हैं जिन्होंने अपने जन्मदिन पर शपथ ली।

जयपुर।

भजन लाल शर्मा ने शुक्रवार को राजस्थान के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली। उनके साथ, दो डिप्टी सीएम - दीया कुमारी और डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने भी प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और अन्य वरिष्ठ नेताओं की उपस्थिति में शपथ ली।

राज्यपाल कलराज मिश्र ने तीनों को पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई।

शपथ लेने के बाद जब भजनलाल ने प्रधानमंत्री का अभिवादन किया तो मोदी ने उनकी पीठ थपथपाई। वहीं, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, वसुंधरा राजे और केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत काफी देर तक हंसते-बतियाते नजर आए।

अल्बर्ट हॉल में आयोजित समारोह के दौरान तीन मंच तैयार किए गए थे। एक मंच पर देशभर से आए साधु-संत बैठे थे, जबकि दूसरे मंच पर सभी राजनीतिक नेता बैठे थे। शपथ के लिए तीसरा मंच बनाया गया था, जिस पर प्रधानमंत्री मोदी, राज्यपाल और शपथ लेने वाले तीनों नेता बैठे थे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी संतों के मंच पर पहुंचे और उनका अभिनंदन किया। समारोह में पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत भी शामिल हुए। वह शपथ ग्रहण समारोह से करीब आधे घंटे पहले अल्बर्ट हॉल पहुंचे और वसुंधरा राजे और केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत के साथ बैठे।

भजन लाल शर्मा ने अपने जन्मदिन के दिन शपथ लिया। उनके परिवार ने उनका जन्मदिन भी उनके अस्थायी अड्डे चंबल पावर हाउस के गेस्ट हाउस में मनाया। सबसे पहले उन्होंने गोविंद देवजी मंदिर में दर्शन किए। इसके बाद उन्होंने अपने माता-पिता के पैर धोए और उनका आशीर्वाद लिया।

शपथ लेने से पहले डिप्टी सीएम प्रेमचंद बैरवा ने मोती डूंगरी गणेश मंदिर में दर्शन किए और डिप्टी सीएम दीया कुमारी ने भी गोविंद देवजी मंदिर में दर्शन किए.

भजनलाल राज्य के पहले सीएम हैं जिन्होंने अपने जन्मदिन पर शपथ ली।

समारोह में केंद्रीय मंत्री अमित शाह, नितिन गडकरी, स्मृति ईरानी, पीयूष गोयल, धर्मेंद्र प्रधान, प्रह्लाद जोशी, अश्विनी वैष्णव, गजेंद्र सिंह शेखावत, भूपेन्द्र यादव, हरदीप सिंह पुरी, अनुराग ठाकुर, अर्जुनराम मेघवाल सहित अन्य शामिल थे।

मुख्यमंत्री कार्यालय के मुख्यमंत्री कक्ष में आज विधिवत पूजा अर्चना कर मुख्यमंत्री का कार्यभार ग्रहण किया

राज्यसभा में शुक्रवार को भी हुआ जबरदस्त हंगामा

नई दिल्ली। संसद की सुरक्षा में चूक के मुद्दे पर समूचे विपक्ष ने शुक्रवार को लगातार दूसरे दिन राज्यसभा में जबरदस्त हंगामा किया। इस कारण सदन की कार्यवाही दो बजे तक स्थगित करनी पड़ी और शून्यकाल की कार्यवाही नहीं हो सकी। सभापति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को जरुरी विधायी दस्तावेज सदन के पटल पर रखने के बाद कार्यवाही शुरू कर कहा कि उन्हें सदस्यों से 13 दिसबंर को संसद की सुरक्षा में हुई चूक के मुद्दे पर चर्चा कराने के लिए नियम 267 के तहत कार्यस्थगन प्रस्ताव के 23 नोटिस मिले हैं। उन्होंने कहा मैंने सदन को घटना के बारे में विस्तार से जानकारी दे दी थी। इस घटना की जांच की जा रही है और इसके अंजाम तक ले जाया जायेगा। इस स्थिति में उन्हें नहीं लगता कि इन नोटिसों को स्वीकार करने का कोई औचित्य है। धनखड़ के इतना कहते ही मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस सहित अन्य विपक्षी दलों के सदस्य अपनी जगहों से उठकर चर्चा की मांग कर जोर से बोलने लगे। सभापति ने विपक्षी सदस्यों से शांत होने की अपील की लेकिन उनके शांत नहीं होने पर उन्होंने कहा कि उन्हें मजबूरन सदन की कार्यवाही स्थगित करनी पड़ रही है।

चंद्रमा से चट्टान के नमूने लाने के लक्ष्य पर कार्य कर रहा इसरो : सोमनाथ

नई दिल्ली । इसरो प्रमुख एस. सोमनाथ ने कहा है कि चंद्रयान-3 मिशन के तहत अंतरिक्ष एजेंसी अब उसकी सतह से कुछ चट्टानी पत्थर लाने पर ध्यान केंद्रित कर रही है। गुरुवार को राष्ट्रपति भवन सांस्कृतिक केंद्र (आरबीसीसी) में विमर्श श्रृंखला पर आयो जित व्याख्यान में उन्होंनें कहा कि चंद्रमा से चट्टानी नमूने लाने के मिशन को अगले चार साल में पूरा करने का लक्ष्य है ।लगभग 40 मिनट की अपनी बातचीत के दौरान, भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख ने कहा कि 'एक भारतीय को अंतरिक्ष में भेजने' का मिशन जारी है।

हंगामे के कारण दूसरे दिन लोकसभा में नहीं चला प्रश्नकाल

नई दिल्ली । लोकसभा में संसद की सुरक्षा के मुद्दे पर विपक्षी दलों ने गुरुवार लगातार दूसरे दिन जबरदस्त हंगामा किया जिसके कारण प्रश्नकाल शुरू होते ही सदन की कार्यवाही दो बजे तक स्थगित कर दी गई। पीठासीन अधिकारी राजेंद्र अग्रवाल ने जैसे ही प्रश्नकाल शुरू किया, विपक्षी दलों के सदस्य हाथों में तख्तियां लेकर और नारे लगाते हुए आसन के सामने आकर हंगामा करने लगे। श्री अग्रवाल ने हंगामे को देखकर सदन की कार्यवाही शुरू होने के तुरंत बाद दो बजे तक के लिए स्थगित कर दी।

धार्मिक स्थलों की यात्रा पर शाहरुख.....

मुंबई । बॉलीवुड अभिनेता शाहरुख खान इन दिनों धार्मिक स्थलों की यात्रा पर निकले हैं। हाल ही में शाहरुख माता वैष्णो देवी के मंदिर में आशीर्वाद लेने पहुंचे थे। वहीं, अब माता वैष्णो देवी के दर्शन के बाद शाहरुख शिरडी साईं दरबार पहुंच गए हैं। शाहरुख अपनी बेटी सुहाना और मैनेजर पूजा ददलानी के साथ साईं बाबा के दरबार पहुंचे हैं, जिसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया है। शाहरुख बेटी सुहाना और मैनेजर के साथ शिरडी साईं बाबा के दर्शन करने पहुंचे। एक वीडियो में शाहरुख डेनिम जींस, व्हाइट टीशर्ट, ओपन ब्लैक शर्ट के साथ कैप और चश्मा लगाए नजर आ रहे हैं। जैसे ही शाहरुख कार से उतरे, वह फैंस की भीड़ में घिर गए। फैंस से मिलने के बाद उन्होंने मंदिर में साईं बाबा के दर्शन किए। वहीं एक दूसरे वीडियो में शाहरुख साईं बाबा के दरबार में बेटी सुहाना के साथ आरती करते दिखाई दे रहे हैं। वह पूरी तरह से साईं बाबा की भक्ति में डूबे नजर आ रहे हैं। शाहरुख इन दिनों अपनी आगामी फिल्म डंकी को लेकर खूब चर्चा में हैं।

मथुरा श्रीकृष्ण जन्मभूमि केसः सुप्रीम कोर्ट पहुंचे मुस्लिम पक्ष को झटका, सर्वे पर रोक से इंकार

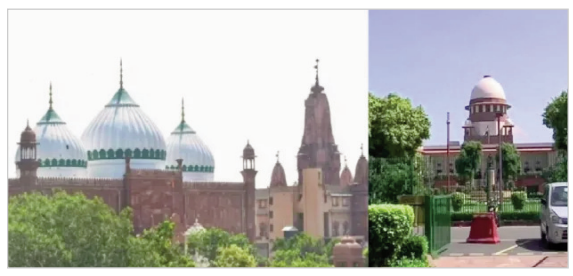

नई दिल्ली ।

मथुरा श्रीकृष्ण जन्मभूमि और शाही ईदगाह मामले में मुस्लिम पक्ष को सुप्रीम कोर्ट से शुक्रवार को बड़ा झटका लगा है। सुप्रीम कोर्ट ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के उस फैसले पर रोक लगाने से इंकार कर दिया है, जिसमें परिसर में सर्वे को मंजूरी देकर कमिश्नर की नियुक्ति की गई थी। ईदगाह कमेटी ने हाईकोर्ट द्वारा कोर्ट कमिश्नर की नियुक्ति करने के मामले में दिए गए आदेश पर रोक लगाने की मांग की थी, इसपर सुप्रीम कोर्ट ने किसी तरह से दखल देने से साफ इंकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने ईदगाह कमेटी की ओर से पेश मुस्लिम पक्षकारों की याचिका पर हस्तक्षेप करने से इंकार कर कहा कि अभी मामले में कोई आदेश जारी नहीं करने वाले है। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के आदेश में किसी भी तरह से रोक लगाने से इंकार कर दिया। मुस्लिम पक्ष ने इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी। श्रीकृ ष्ण जन्े मभूमि और शाही ईदगाह विवाद मामले में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने विवादित परिसर का सर्वे करने का आदेश दे दिया था। इसके लिए 3 कमिश्े नर भी नियुक्े त कर दिए गए हैं। हाईकोर्ट में श्रीकृष्ण विराजमान की ओर से इस लेकर अर्जी दाखिल की गई थी। अर्जी में एडवोकेट कमिश्नर द्वारा सर्वे करने की मांग की गई थी। अर्जी पर सुनवाई होने के बाद जस्टिस मयंक कुमार जैन ने 16 नवंबर को फैसला सुरक्षित रख लिया था। हाईकोर्ट में अर्जी पर श्रीकृष्ण विराजमान की ओर से अधिवक्ता विष्णु शंकर जैन ने बहस की थी।

संसद सुरक्षा में चूकः मामले में बड़ी सफलता, अब तक पकड़े गए 9 आरोपी

नई दिल्ली।

संसद की सुरक्षा में सेंध लगाने के मामले में जांच बहुत गंभीरता से की जा रही है। कई लोगों से पूछताछ और आरोपियों को दबोचने की प्रक्रिया तेजी से चल रही है। इस घटना को लेकर एक से एक कडियां भी जुड़ती जा रहीं हैं। इसी क्रम में दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने इस मामले में दो और लोगों को हिरासत में लिया है। जिनकी पहचान महेश और कैलाश के रूप में हुई है। दोनों पर अन्य आरोपियों की मदद करने का आरोप लगाया गया है। हिरासत में लिए जाने के बाद दोनों से स्पेशल सेल की टीमें पूछताछ कर रही हैं।

बता दें कि संसद सुरक्षा चूक मामले में पुलिस अभी तक 9 लोगों को पकड़ चुकी है, जिनमें सागर शर्मा, मनोरंजन, नीलम, विक्की, विक्की की पत्नी, ललित झा, महेश और कैलाश शामिल हैं। प्राप्त जानकारी के मुताबिक महेश भी संसद में हंगामा करने के मकसद से आने वाला था। लेकिन किसी कारणवश उसे परिजनों ने रोक दिया था। सागर और मनोरंजन ने बीते बुधवार को शीतकालीन सत्र के दौरान सदन में छलांग लगा दी थी। वहीं नीलम और उसके अन्य साथी ने संसद भवन के बाहर प्रदर्शन किया था। वहीं ललित भी संसद भवन के बाहर घटनाक्रम को रिकॉर्ड कर रहा था. इन चारों का फोन भी ललित के पास पड़ा हुआ था।

इन पर आरोपियों के लिए लॉजिस्टिक सपोर्ट देने की भी बात की जा रही है। स्पेशल सेल की काउंटर इंटेलिजेंस यूनिट इन दोनों लोगों से पूछताछ कर रही है। एक आरोपी महेश राजस्थान का रहने वाला है और ये भी भगत सिंह फैंस क्लब नाम के फेसबुक पेज से जुड़ा हुआ था।

वहीं जब पुलिस आरोपियों को पकड़ कर ले जार रही थी इसी दौरान ललित फरार हो गया था। ललित को पकड़ने के लिए पुलिस ने हरियाणा और राजस्थान में दबिश दी थी। लेकिन कोई सफलता नहीं मिली। हालांकि गुरुवार की देर रात को ललित ने खुद दिल्ली के कर्तव्य थाने में सरेंडर कर दिया, जिसके बाद उससे पूछताछ शुरू की गई। दिल्ली पुलिस को ललित के पास से मनोरंजन, सागर, नीलम और एक अन्य युवक का फोन नहीं मिला। आशंका जताई जा रही है कि ललित ने सभी फोनों को नष्ट कर दिया है।

शिमला से ज्यादा ठिठुर रही देश की राजधानी दिल्ली

नई दिल्ली ।

देश की राजधानी दिल्ली जमकर ठिठुर रही है। आलम यह है कि दिल्ली शिमला की ठंड को भी मात दे चुकी है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग यानी आईएमडी के ताजा आंकड़ों के अनुसार, सफदरजंग में सुबह न्यूनतम तापमान 4.9 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया है। इसके अलावा कई इलाके घने कोहरे की चादर में रहे। देश के लोकप्रिय पर्यटन स्थलों में से एक शिमला में न्यूनतम तापमान 6.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। जबकि, अधिकतम तापमान 14 डिग्री सेल्सियस रहा। दिल्ली में अधिकतम तापमान 24.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। यह आंकड़ा 24 डिग्री सेल्सियस तक रहने के आसार हैं। हालांकि, शिमला में अधिकतम 15 डिग्री रह सकता है।

देश के प्रमुख शहरों में न्यूनतम तापमान

शुक्रवार को चंडीगढ़ में न्यूनतम तापमान 7 डिग्री, भोपाल में 11 डिग्री, उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में 9 डिग्री, बिहार के पटना में 11 डिग्री, राजस्थान के जयपुर में 11 डिग्री, उदयपुर में 9 डिग्री, जोधपुर में 11 डिग्री, इंदौर में 14 डिग्री सेल्सियस पारा है। इस सप्ताह उत्तर भारत के अधिकांश राज्यों में कोहरा छाए रहने के आसार हैं।

कांग्रेस स्थापना दिवस पर 28 दिसंबर को नागपुर में कांग्रेस की महारैली- के.सी. वेणुगोपाल

- राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी रहेंगी मौजूद

- महारैली में राज्यभर से 10 लाख कांग्रेस कार्यकर्ता शामिल होंगे- नाना पटोले.
- नागपुर रैली से कांग्रेस लोकसभा चुनाव का बिगुल फूंकेगी

नागपुर।

राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी के स्थापना दिवस के अवसर पर 28 दिसंबर को नागपुर में कांग्रेस पार्टी की एक महा रैली का आयोजन किया गया है। इस रैली में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, कांग्रेस संसदीय दल की अध्यक्ष सोनिया गांधी, पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी, कांग्रेस पार्टी के सभी मुख्यमंत्री, सभी कार्य समिति के सदस्य, विधायक दल के नेता, विपक्षी नेता, कांग्रेस के सभी प्रदेश अध्यक्ष शामिल होंगे। इस बात की जानकारी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के संगठन के महासचिव के. सी वेणुगोपाल ने दी है।

शुक्रवार को नागपुर के होटल ली मेरिडियन में आयोजित बैठक में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव के.सी.वेणुगोपाल व पूर्व केंद्रीय मंत्री मुकुल वासनिक की मौजूदगी में कांग्रेस नेताओं की बैठक हुई। इसमें महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस के अध्यक्ष नाना पटोले, विधायक कांग्रेस दल के नेता बालासाहेब थोरात, विपक्ष के नेता विजय वडेट्टीवार, पूर्व मुख्यमंत्री और कांग्रेस कार्य समिति के सदस्य अशोकराव चव्हाण, पूर्व मुख्यमंत्री पृथ्वीराज चव्हाण, विधान परिषद में कांग्रेस पार्टी के समूह नेता सतेज उर्फ बंटी पाटिल, पूर्व मंत्री और कार्यकारी अध्यक्ष नसीम खान, विश्वजीत कदम, प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष प्रणीति शिंदे, कुणाल पाटिल, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सचिव रामकिशन ओझा, नागपुर शहर कांग्रेस अध्यक्ष विकास ठाकरे, ग्रामीण जिला अध्यक्ष पूर्व मंत्री राजेंद्र मुलक, विधायक भाई जगताप, अमर राजुरकर, नाना गावंडे, मुख्य प्रवक्ता अतुल लोंढे, सोशल मीडिया विभाग के प्रमुख विशाल मुत्तेमवार, प्रदेश महासचिव देवानंद पवार और अभिजीत सपकाल समेत अन्य नेता उपस्थित थे। बैठक के बाद पत्रकारों से बात करते हुए के.सी. वेणुगोपाल ने आगे कहा कि देशभर में कांग्रेस पार्टी का जनसमर्थन बढ़ रहा है। हाल ही में चार राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी के वोट शेयर में भारी बढ़ोतरी हुई है। कर्नाटक के बाद कांग्रेस ने तेलंगाना में भी स्पष्ट बहुमत के साथ सत्ता स्थापित कर ली है। भारतीय जनता पार्टी की सरकार तानाशाही तरीके से काम कर रही है। यहां तक की देश की संसद सुरक्षित नहीं है तो फिर देश कैसे सुरक्षित रहेगा। यह सवाल उठाते हुए वेणुगोपाल ने कहा कि लोकतंत्र के मंदिर संसद पर अब तक दो बार हमला हो चुका है और दोनों बार भारतीय जनता पार्टी सत्ता में थी। जब कांग्रेस समेत विपक्षी दलों के सांसदों ने संसद की सुरक्षा को लेकर सरकार से सवाल किया तो सवाल पूछने वाले 14 सदस्यों को निलंबित कर दिया गया लेकिन इन हमलावरों को पास देने वाले बीजेपी सांसदों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। इस मौके पर प्रदेश अध्यक्ष नाना पटोले ने कहा कि नागपुर में होने वाली रैली में राज्य भर से 10 लाख लोग शामिल होंगे। इसमें कांग्रेस नेता, पदाधिकारी, कार्यकर्ता, महिला कांग्रेस, युवा कांग्रेस, एनएसयूआई, पार्टी के सभी प्रकोष्ठ और विभाग रैली को सफल बनाने का काम करेंगे। चूंकि लोकसभा चुनाव अभी तीन महीने दूर हैं, ऐसे में यह रैली कांग्रेस कार्यकर्ताओं में जबरदस्त उत्साह और ऊर्जा पैदा करने का काम करेगी।

पटोले ने विश्वास जताया है कि नागपुर में होने वाली रैली ऐतिहासिक होगी और देश में बदलाव की शुरुआत यहीं से होगी।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संपादकीय

सदन में अप्रिय

संसद की सुरक्षा में सेंध की तरह ही दुखद है, इस मसले पर दोनों सदनों में हंगामा और निलंबन। लोकसभा में तो इतना हंगामा हुआ कि 14 विपक्षी सांसदों को निलंबित कर दिया गया! लोकसभा में निलंबित होने वाले सांसदों में कांग्रेस के नौ, माकपा और द्रमुक के दो-दो और भाकपा के एक सांसद शामिल हैं। राज्यसभा से तृणमूल कांग्रेस के सांसद डेरेक ओ ब्रायन को निलंबित किया गया है। यह बात स्पष्ट है कि बुधवार को लोकसभा की सुरक्षा में लगी सेंध के बाद से विपक्ष गुस्से में है और उसे सरकार को घेरने का मौका मिल गया है। विपक्ष इस पूरे मामले पर केंद्रीय गृह मंत्री से बयान की मांग कर रहा है और साथ ही, भाजपा के उस सांसद को भी निलंबित करने की मांग हो रही है, जिसकी अनुशंसा पर आरोपियों को लोकसभा की दर्शक दीर्घा में प्रवेश मिला था। विपक्ष की मांग पर सरकार अवश्य विचार कर रही होगी, लेकिन विपक्षी सांसदों को सरकार से जवाब मांगते हुए संयम का यथोचित परिचय देना चाहिए। हालांकि, उनकी आक्रामकता चुनाव के मद्देनजर कतई आश्चर्य में नहीं डालती है। संसद की सुरक्षा में सेंध एक संवेदनशील मामला है और गनीमत है, संसद या सांसदों को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुंचा है। संसद के करीब आठ कर्मचारियों को लापरवाही बरतने के चलते निलंबित किया गया है और सरकार निश्चित रूप से अब ऐसे उपाय करने में जुटी होगी, ताकि ऐसी नौबत फिर न आए। विपक्षी सांसद भी अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित हैं और वे भी पूरी सच्चाई जानना चाहेंगे। संसद में सरकार से जवाब मांगने की एक परंपरा रही है और देर-सबेर सरकार इस पर जवाब देती भी है। अभी जांच एजेंसियां हर मुमकिन तथ्यों का पता लगा रही हैं। बीच सदन में कूदने वालों का पूरा सच सरकार को जानना ही होगा। क्या केवल बेरोजगारी और मणिपुर, दो ऐसे मसले हैं, जिनकी वजह से दोषियों ने ऐसा दुस्साहस दिखाया है? चिंता तो इसलिए भी होती है कि इस हिमाकत के लिए 13 दिसंबर का दिन ही क्यों चुना गया? बेशक, यह सरकार के सुरक्षा प्रबंधों को चुनौती देने का मामला है और इस दुस्साहस की चर्चा दुनिया में जगह-जगह हो रही होगी। इस विषय पर भारतीय संसद को पूरी संवेदनशीलता और जिम्मेदारी का परिचय देना चाहिए। बहरहाल, निलंबन की कार्रवाई विरल ही होनी चाहिए। भारतीय लोकतंत्र को अपनी परिपक्वता का प्रमाण पेश करना चाहिए। ऐसा नहीं है कि सरकार की ओर से जवाब नहीं दिया जा रहा है, मगर एक मंत्री विशेष से जवाब मांगना और जवाब न मिलने पर आसन की अवहेलना करना कहां तक उचित है? क्या मंत्रिस्तरीय जवाब के लिए कुछ समय देना ज्यादा ठीक नहीं रहता? खैर, सदन में व्यवहार सांसदों के विवेक पर निर्भर करता है। अब इस लोकसभा का कार्यकाल छह महीने भी नहीं बचा है, सर्दियों के उतरते ही सभी सांसद चुनावी क्षेत्र में चले जाएंगे, अत- हंगामा और उस पर जवाबी कार्रवाई को टालना आसान नहीं है। पूरे प्रकरण में सांसदों को सर्वाधिक सचेत रहने की जरूरत है। बिना परिचय किसी को दर्शक दीर्घा के पास देना भारी पड़ा है। यह निंदनीय है कि किसी सांसद का लॉग इन पासवर्ड बंट जाता है, तो किसी सांसद के नाम पर कोई अन्य इतना अहम पास जारी कर देता है।

आज का राशीफल

मेष पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। आपके वर्चस्व तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे।

वृषभ जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। नए अनुबन्ध प्राप्त होंगे।

मिथुन प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। आर्थिक लाभ होगा। उदर विकार या त्वचा के रोग से पीड़ित रहेंगे। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा।

कर्क पारिवारिक जनों के मध्य सुखद समाचार मिलेगा। रोजी रोजगार के प्रयास सफल होंगे। भाग्यवश कुछ ऐसा होगा जिसका आपको लाभ मिलेगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहें।

सिंह व्यावसायिक योजना सफल होगी। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। वाणी की सौम्यता से रुके हुए कार्य सम्पन्न होंगे। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। नए अनुबन्ध प्राप्त होंगे।

कन्या जीवन साथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। आय के नए स्त्रोत बनेंगे। शिक्षा प्रतियोगिता के क्षेत्र में आशातीत सफलता मिलेगी। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। प्रेम प्रसंग प्रगाढ़ होंगे।

तुला पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत रहें चोरी या खोने की आशंका है।

वृश्चिक आय और व्यय में संतुलन बनाकर रखें। व्यावसायिक दिशा में किया गया प्रयास सफल होगा। रुपए पैसे के लेन-देन में सावधानी रखें। विरोधियों का पराभव होगा। वाहन प्रयोग में सावधानी अपेक्षित है।

धनु पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। धन, पद, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। किया गया परिश्रम सार्थक होगा। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। व्यर्थ की भागदौड़ रहेगी।

मकर राजनैतिक दिशा में किए गए प्रयास फलीभूत होंगे। व्यावसायिक व पारिवारिक समस्याएं रहेंगी। आर्थिक संकट से गुजरना होगा। वाणी की सौम्यता आपको सम्मान दिलायेगी।

कुम्भ बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। टकराव की स्थिति आपके लिए हितकर नहीं होगी। प्रणय संबंध प्रगाढ़ होंगे। धन आगमन होगा। कुटुम्बजनों का सहयोग मिलेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी।

मीन कार्यक्षेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। यात्रा देशाटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। भारी व्यय का सामना करना पड़ेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे।

मोहन -राज को अपनी छाप की जरूरत.....

लेखक राकेश अचल

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव के समाने मौजूद तमाम चुनौतियों में से सबसे बड़ी चुनौती निवर्तमान मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की लोकप्रिय छवि से पार पाने की है । मुख्यमंत्री ने जिस तरह से पदग्रहण के बाद प्रशासकीय फैसले लिए हैं उन्हें देखकर लगता है कि वे पड़ौसी राज्य उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की नकल कर रहे हैं। मोहन यादव को नकल की नहीं असल और मौलिक छवि बनाने की जरूरत है ,इसके बिना वे कामयाब नहीं हो सकते। मध्यप्रदेश में मोहन सरकार ने सबसे पहले पूजाघरों पर लगे ध्वनि विस्तारक यंत्रों के खिलाफ कार्रवाई करने और खुले में मांस बेचने पर रोक लगाने के आदेश दिए है। सरकार ने भाजपा कार्यकर्ता का हाथ काटने वाले एक आरोपी के घर पर बुलडोजर भी चलाया है। इसमें नया कुछ भी नहीं है । ये सब यूपी में पहले से हो रहा है। ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर कार्रवाई अदालत के एक पुराने फैसले को आधार बनाकर की गयी है। लेकिन इस कार्रवई की जद में मैरिज हाउस को नहीं लिया गया है। शादी घरों में रात एक-दो बजे तक डीजे बजते रहते हैं ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर रोक सराहनीय कदम है । हम वर्षों से ध्वनि विस्तारकों के इस्तेमाल पर गवर्नर लगाने की मांग करते रहे हैं ,लेकिन कोई भी सरकार इस पर गौर नहीं करती । केवल प्रशासकीय आदेश जारी कर मुक्ति पा लेती है।

मैंने अमेरिका में देखा है कि पूजाघरों में ध्वनि विस्तारक यंत्रों के इस्तेमाल पर रोक नहीं है लेकिन उनकी ध्वनि सीमा तय है । यानि लाउड स्पीकर की आवाज मंदिर,मस्जिद या गुरुद्वारा परिसर के बाहर नहीं सुनाई देती । गिरजाघर का घंटा भी ध्वनि सीमा के हिसाब से ही बजता है। ऐसा ही हमारे यहां होना चाहिए,क्योंकि कानफोडू शोर स्वास्थ्य के लिए बहुत घातक है। हमारे यहां तो पूजाघरों में ही नहीं बल्कि हर मांगलिक कार्य में अखंड रामायण पाठ हो या सुंदरकांड लाउड स्पीकर सबसे पहले चाहिए। ध्वनिविस्तारक यंत्रों पर रोक का कदम स्वागत योग्य है बाशर्त की उसमें पक्षपात न हो। प्रदेश में खुले में मांस बेचने का निर्णय भी स्वागत योग्य है,लेकिन इस फैसले पर अमल से पहले यदि मांस विक्रेताओं को डीप फ्रीजर खरीदने के लिए वित्तपोषण किया जाये तो और बेहतर हो । खुले में मांस की बिक्री स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उचित नहीं है। मांस की बिक्री के लिए आधुनिक और वैज्ञानिक तरीके इस्तेमाल किये जाना चाहिए लेकिन मांस विक्रेता इतने सम्पन्न नहीं हैं कि वे रातों रात मांस रखने के लिए डीप फ्रीजर खरीद सकें। मांस विक्रेता यदि ध्यान दें और सरकार का सहयोग करें तो मांस भी मिठाई की भांति साफ़-सुथरे तरीके से बेचा जा सकता है। लेकिन इस फैसले के पीछे सरकार का नजरिया लोक स्वास्थ्य ही हो ,धार्मिक नहीं। मांस विक्रेताओं को परेशान करने कि दृष्टि इसके पीछे नहीं होना चाहिए।

सरकार को ऐसे तमाम निर्णय लेते समय भारतीय बाजारों की संरचना का भी ख्याल रखना चाहिये । भारत में खास तौर पर मध्यप्रदेश में मांस और अण्डों कि बिक्री का तरीका पारम्परिक है । पका-अधपका मांस भी प्रदर्शन करके ही बेचा जाता है। इसे बदलने की जरूरत है ,या तो सरकार मांस बिक्री के लिए अलग बाजार का इंतजाम करे या फिर नए तरीके आजमाए। ताजा मांस पैकेजिंग और फ्रीजिंग के जरिये ज्यादा बेहतर तरीके से बेचा जा सकता है ,इससे किसी को कोई समस्या नहीं हो सकती। इस मुद्दे पर भाजपा कि सभी राज्य सरकारों का रुख एक जैसा है ,यानि अल्पसंख्यक विरोधी। अल्पसंख्यकों को परेशान कर कोई भी सरकार कामयाब नहीं हो सकती। सबका विकास ,सबका साथ के रस्ते पर चलने के लिए अल्पसंख्यकों को भी साथ रखना ही होगा।

हाल ही में संसद में अल्पसंख्यकों को जुमे के दिन मिलने वाला नमाज का अवकाश रद्द कर दिया गया है। ये निर्णय क्यों लिया गया ,ये सरकार बेहतर जानती है लेकिन इस निर्णय का सन्देश अच्छा नहीं गया। वैसे भी सत्तारूढ़ दल कि और से किसी भी सदन में कोई नमाजी सांसद बचा नहीं है किन्तु दूसरे दलों के अल्पसंख्यक सांसद तो हैं जो इस सुविधा का लाभ लेना चाहते हैं। ये सुविधा पहले से है इसलिए इसे तुष्टिकरण से जोड़कर नहीं देखा जाना चाहिए। लेकिन सरकार तो सरकार है ,वो जो चाहे सो कर सकती है।

भाजपा कि नव निर्वाचित सरकारें यूपी की तरह बुलडोजर संहिता पर काम करना चाहतीं है। भोपाल में एक पुराने अपराधी के घर चलाया गया बुलडोजर इसका उदाहरण है । विधानसभा चुनाव प्रचार के दौरान उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जिस प्रदेश में भी गए वहाँ अपना बुलडोजर भी ले गए थे। ये समाज को आतंकित करने वाला तरीका है। अपराधी के खिलाफ विधिसम्मत कार्रवाई की जाना चाहिए न कि इसके लिए कोई तालिबानी तरीका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। बुलडोजर सांसजृति का उल्लेख या प्रावधान किसी भी संहिता में नहीं है । यदि सरकार को लगता है कि बुलडोजर ही अपराधियों को सबक सीखने का एकमात्र उपाय है तो सरकार को दंड प्रक्रिया संहिता में संशोधन कर बुलडोजर को उसमें शामिल कर लेना चाहिए ,ताकि बुलडोजर का इस्तेमाल वैध हो सके। वैसे सरकार बुलडोजर चलने के बजाय अपनी पुलिस का इकबाल बुलंद करे,पुलिस को राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त कर कार्रवाई करने की छूट दे तो स्थितियां और ज्यादा बेहतर तरीके से सुधर सकतीं है।नई सरकार को प्रदेश की क़ानून और व्यवस्था में सुधार के लिए प्रदेश के कुछ शहरों में लागू पुलिस कमिश्नर प्रणाली की समीक्षा भी करना होगी ।

नए मुख्यमंत्री मोहन यादव की चुनौती अपनी छवि बनाने कि है ,ये चुनौती बड़ी इसलिए भी है क्योंकि पुराने मुख्यमंत्री उसी विधानसभा में मौजूद हैं। वे जब तक सामने रहेंगे तब तक मोहन यादव की छवि कि तुलना चौहान की छवि से की जाएगी । चौहान तो 18 साल में सूबे के मामा और भाई बन चुके हैं। इसका मुजाहिरा वे विधानसभा चुनाव में कर भी चुके हैं ऐसे में यादव जी अपनी कौन सी छवि बनाएंगे ये वे खुद या उनकी पार्टी तय करेगी। नौकरशाही भी छवि निर्माण का एक महवत्वपूर्ण औजार है। बेहतर हो कि यादव न योगी बनने का प्रयास करने और न शिवराज बनने का प्रयास करें। वे मोहन के साथ मन-मोहन बनने की कोशिश करें। कोशिश करें कि सूबे में भाजपा का राज कायम हो न कि यादव राज। क्योंकि वैसे भी नए मुख्यमंत्री के साथ उनका अतीत भी अभी बाबस्ता है। उनकी छवि बनने से पहले बिगाड़ने का अभियान भी सोशल मीडिया पर शुरू हो चुका है। इसे रोकना आसान काम नहीं है। मोहन यादव को यदि नकल ही करना है तो उन्हें ओडिशा के मुख्यमंत्री की नकल करना चाहिए। जो बिना किसी बुलडोजर के ओडिशा में अखंड राज कर रहे है। उनके पास न कोई मोदी है और न कोई शाह।

बेटे के कारण किया सरेंडर

(लेखक- रमेश सर्राफ धमोरा/)

राजस्थान में भाजपा विधायक दल के नेता के पद पर पहली बार विधायक बने भजनलाल शर्मा का चयन हो चुका है। शुक्रवार को भजनलाल शर्मा मुख्यमंत्री के पद की व जयपुर राजघराने की दिया कुमारी तथा डॉक्टर प्रेमचंद बैरवा उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ग्रहण कर ली है।

चर्चा है कि अपने पुत्र दुष्यंत सिंह जो झालावाड़ सीट से चौथी बार सांसद है। उनके राजनीतिक भविष्य को लेकर वसुंधरा राजे ने पार्टी आलाकमान के निर्णय के साथ रहने में ही अपनी भलाई समझी और उन्होंने चुपचाप पार्टी के निर्देशों का पालन किया। वसुंधरा राजे का पुत्र दुष्यंत सिंह चार बार के सांसद है तथा आगे उन्हें केंद्र सरकार में मंत्री बनाए जाने की भी संभावना व्यक्त की जा रही है। बहरहाल वसुंधरा राजे ने तो अपने पुत्र के मुंह में पार्टी नेतृत्व के समक्ष हथियार डाल दिए हैं।

इसके साथ ही राजस्थान में विधिवत रूप से भाजपा की सरकार काम करने लग गयी है। भाजपा ने विधानसभा अध्यक्ष पद के लिए भी अजमेर उत्तर के विधायक वासुदेव देवनानी का नाम तय कर दिया है। निर्धारित प्रक्रिया के तहत उनका भी विधानसभा अध्यक्ष पद के लिए चयन हो जाएगा। राजस्थान में भाजपा के 115 विधायक जीत कर आए हैं। इसके साथ ही कई निर्दलीय विधायकों ने भी भाजपा को समर्थन देने के संकेत दिए हैं। ऐसे में भाजपा के नए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को पांच साल तक सरकार चलाने में किसी तरह की दिक्कत नहीं होने वाली है।

भजनलाल शर्मा के नेता पद के चुनाव से पहले राजनीतिक विश्लेषक आशंका जता रहे थे कि पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे खुद के अलावा किसी अन्य के नाम पर सहमत नहीं होगी। विधानसभा के चुनाव परिणाम आने के बाद से ही वसुंधरा राजे द्वारा अपने आवास पर विधायकों को बुलाकर लगातार शक्ति प्रदर्शन भी किया गया था। मगर जब रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह पर्यवेक्षक बनकर जयपुर आए तो उन्होंने मात्र दो घंटो में ही भजनलाल शर्मा को अगला मुख्यमंत्री घोषित कर वसुंधरा राजे के पूरे खेल को ही बिगाड़ कर रख दिया था। इतना ही नहीं भजनलाल के नाम का प्रस्ताव भी वसुंधरा राजे से ही करवाया गया था। विधायक दल की बैठक के दौरान राजनाथ सिंह ने अपनी जेब से एक पर्ची निकालकर वसुंधरा को दी थी। जिस पर भजनलाल शर्मा का नाम लिखा था। राजनाथ सिंह द्वारा दी गयी पर्ची पर लिखे नाम को पढ़कर एक बार तो वसुंधरा सकपका गयी थी। मगर बाद में उन्होने भजनलाल के नाम का प्रस्ताव कर दिया था।

लोगों का कहना है कि नेता पद के चयन से पहले वसुंधरा राजे व उनके समर्थक पूर्व प्रदेश अध्यक्ष अशोक परनामी, पूर्व विधायक भवानीसिंह राजावत, प्रहलाद गुंजल जैसे कई नेता व विधायक लगातार कह रहे थे कि वसुंधरा राजे जैसी अनुभवी को ही प्रदेश में तीसरी बार मुख्यमंत्री बनाना चाहिए। प्रदेश की खराब वित्तीय स्थिति का सामना वसुंधरा राजे जैसी अनुभवी नेता ही कर सकती है। उनको दो बार सरकार चलाने का अनुभव है। वह पूरे प्रदेश से अच्छी तरह वाकिफ है। मगर वसुंधरा राजे के किसी भी समर्थक की एक भी नहीं सुनी गई और भजनलाल के नाम का की घोषणा हो गई।

राजनीतिक हलकों में चर्चा है कि जब जयपुर में वसुंधरा राजे विधायकों के साथ शक्ति प्रदर्शन कर रही थी। तब उनके सांसद पुत्र दुष्यंत सिंह पर भी जयपुर के एक होटल के हाडौती के कुछ विधायकों की बाड़ेबंदी करने की खबरें आई थी। तब भाजपा आलाकमान सतर्क हो गया और वसुंधरा राजे को दिल्ली बुलाया गया। दिल्ली में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा व गृहमंत्री अमित शाह ने वसुंधरा राजे को दो टूक शब्दों में समझा दिया था कि इस बार उनको मुख्यमंत्री नहीं बनाया जा रहा है। पार्टी नए लोगों को आगे करेगी ऐसे में आपको पार्टी का साथ देना चाहिए। चर्चा है कि पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा व अमित शाह ने वसुंधरा राजे को कड़ाई से कह दिया था कि उन्होंने एक लंबी राजनीतिक पारी खेल चुकी है। इसलिए अब उनको विश्राम करना चाहिए। यदि वह पार्टी के निर्णय के साथ रहेगी तो उनके सांसद पुत्र दुष्यंत सिंह को पार्टी में आगे बढ़ाया जाएगा।

चर्चा है कि अपने पुत्र दुष्यंत सिंह जो झालावाड़ सीट से चौथी बार सांसद है। उनके राजनीतिक भविष्य को लेकर वसुंधरा राजे ने पार्टी आलाकमान के निर्णय के साथ रहने में ही अपनी भलाई समझी और उन्होंने चुपचाप पार्टी के निर्देशों का पालन किया। वसुंधरा राजे का पुत्र दुष्यंत सिंह चार बार के सांसद है तथा आगे उन्हें केंद्र सरकार में मंत्री बनाए जाने की भी संभावना व्यक्त की जा रही है। बहरहाल वसुंधरा राजे ने तो अपने पुत्र के मुंह में पार्टी नेतृत्व के समक्ष हथियार डाल दिए हैं। मगर उनको मुख्यमंत्री बनाने की मांग को लेकर बारां अंता के विधायक कंवरलाल मीणा, कालीचरण सर्राफ, प्रताप सिंह सिंघवी, बहादुर सिंह कोली जैसे लोग खुलकर सामने आ चुके हैं। इससे उनकी छवि जरूर पार्टी नेतृत्व के सामने दागदार हुई है। हो सकता है आने वाले समय में उन्हें पार्टी द्वारा सरकार या संगठन में कोई जिम्मेदारी भी नहीं दी जाए।

पार्टी ने उनके स्थान पर राजपूत नेता के तौर पर जयपुर राजघराने की दीया कुमारी को उपमुख्यमंत्री बना कर प्रदेश की राजनीति में आगे बढ़ा दिया है। दीया कुमारी उनकी तरह जयपुर जैसे बड़े राजपरिवार की बेटी के साथ महिला भी हैं। दीया कुमारी राजसमंद से सांसद व दूसरी बार विधायक बनी है। उन्होने विधाधर नगर सीट पर राजस्थान में सबसे बड़ी जीत दर्ज की है। दूसरा उपमुख्यमंत्री अनुसूचित जाति के डा. प्रेमचंद बैरवा को बनाया गया हैं। जो वसुंधरा गुट के माने जाते थे। मगर अब बैरवा सरकार में शामिल हो गये हैं। इसी तरह अपने राजनीतिक भविष्य को लेकर वसुंधरा के साथ रहने वाले विधायक भी अब एक-एक कर खिसकने लगे हैं।

वसुंधरा राजे स्वयं इस समय पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष है। भाजपा में जिस तरह से आलाकमान प्रभावी है। उसको देखकर नहीं लगता है कि वसुंधरा राजे को आगे चलकर पार्टी में कोई और अधिक बड़ी जिम्मेदारी मिलेगी। मौजूदा संकेतों से तो वसुंधरा राजे का राजनीतिक भविष्य गुमनामी की ओर ही जाता दिख रहा है। उनके कई समर्थकों का इस बार टिकट भी काट दिया गया। मौजूदा हालात को देखकर तो लगता है कि आने वाले समय में वसुंधरा राजे के अन्य समर्थको को भी पार्टी में प्रभावहीन कर दिया जाये तो किसी को आश्चर्य नहीं होगा।

(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार है। इनके लेख देश के कई समाचार पत्रों में प्रकाशित होते रहते हैं।)

विचार मंथन

ओल्ड पेंशन स्कीम केंद्र सरकार को स्वीकार्य नहीं

(लेखक-सनत जैन)

वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने संसद में जानकारी देते हुए कहा, कि नई पेंशन स्कीम के मुद्दों को सुलझाने के लिए वित्त सचिव की अध्यक्षता में एक कमेटी बनाई गई है। जो नेशनल पेंशन स्कीम में सुधार करने की दिशा में काम कर रही है। उन्होंने संसद में स्पष्ट रूप से कहा,कि ओल्ड पेंशन स्कीम लागू नहीं होगी। नई पेंशन स्कीम में संशोधन करके बेहतर बनाया जाएगा। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने यह कहकर भी चिंता जताई है, कि 50 लाख कर्मचारियों का एनपीएस में जमा 2.5 लाख करोड़ रूपया वापस देने की कोई योजना सरकार के पास नहीं है। केंद्र सरकार ने अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। 2004 के बाद नौकरी में आए हुए 50 लाख कर्मचारियों को ओल्ड पेंशन स्कीम का लाभ नहीं मिलेगा। उन्हें नेशनल पेंशन स्कीम का ही लाभ मिलेगा। वहीं राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, पंजाब और झारखंड राज्यों ने ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करने की घोषणा की है। छत्तीसगढ़, राजस्थान और हिमाचल में ओल्ड पेंशन स्कीम को लागू कर दिया गया है। पंजाब ने अधिसूचना जारी कर दी है। झारखंड ने भी अधिसूचना तो जारी कर दी है। लेकिन अभी भुगतान नहीं किया जा रहा है। ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करने वाले सभी राज्य 2004 के बाद से, जो भी राशि नेशनल पेंशन स्कीम में जमा हुई है। उसे केंद्र सरकार से वापस मांग रहे हैं। केंद्र सरकार जमा राशि को वापस नहीं कर रहा है। जिसके कारण राज्यों को ओल्ड पेंशन स्कीम को लागू करने में वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। 2004 के बाद से कर्मचारियों को अंशदान नेशनल फंड स्कीम में जमा हो रहा है। केन्द्र सरकार यदि राज्यों को जमा राशि वापिस नहीं करेगी। ऐसी स्थिति में राज्य सरकारें ओल्ड पेंशन स्कीम लागू नहीं कर पायेंगी। इसको लेकर केन्द्र एवं राज्यों के बीच टकराव बढ़ रहा है। राजस्थान में 2022 के बाद 600 से ज्यादा कर्मचारी रिटायर हुए हैं। उन्हें अंतिम वेतन की 50 फीसदी राशि बतौर पेंशन दी जा रही है। हिमाचल प्रदेश में भी 2022 के बाद से सेवा निवृत हुए 550 कर्मचारियों को अंतिम वेतन का 50 फ़ीसदी पेंशन के रूप में दिया जा रहा है। छत्तीसगढ़ सरकार ने 2018 से ऑप्सन लागू किया है। केंद्र सरकार द्वारा अभी तक नेशनल पेंशन स्कीम में जमा राशि राज्यों को वापस नहीं की है। जिसके कारण यहां पर ओल्ड पेंशन स्कीम योजना लागू नहीं हो पाई है। झारखंड सरकार केंद्र सरकार से नेशनल पेंशन स्कीम में जमा राशि की वापस करने की लगातार मांग कर रही है। केंद्र सरकार ने राशि वापस करने से इनकार कर दिया है। नेशनल पेंशन स्कीम का बहुत सारा पैसा शेयर बाजार में भी निवेश किया गया है। यदि सरकार शेयर बाजार से नेशनल फंड स्कीम की राशि निकालती है, तो शेयर बाजार गिरने का डर भी है। केंद्र एवं राज्यों के बीच सहमति नहीं बन पाने के कारण ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करने को लेकर असमंजस की स्थिति बनी हुई है। कांग्रेस ने मध्य प्रदेश, राजस्थान एवं छत्तीसगढ़ का चुनाव ओल्ड पेंशन स्कीम के नाम पर लड़ा था। लेकिन तीनों राज्यों में कांग्रेस विधानसभा का चुनाव हार गई है। इसके कारण केंद्र सरकार भी ओल्ड पेंशन स्कीम को लेकर ज्यादा गंभीर नहीं है। ओल्ड पेंशन स्कीम लागू करने वाले राज्य किस तरीके से लागू कर पाएंगे। यह चिंता का विषय बन गया है। केंद्र सरकार ने नेशनल पेंशन स्कीम में संशोधन के लिए केंद्रीय वित्त सचिव की अध्यक्षता में जो कमेटी बनाई है। उसने राज्यों का दौरा कर लिया है। सारी जानकारी एकत्रित कर ली है। लेकिन अभी तक उसने कोई रिपोर्ट केंद्र सरकार को नहीं सोपी है। जिसके कारण 50 लाख से ज्यादा कर्मचारियों के सामने अनिश्चय की स्थिति बनी हुई है। वहीं केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारों के बीच ओल्ड पेंशन स्कीम को लेकर विवाद लगातार बढ़ते ही जा रहे हैं। अब देखना है इस मुद्दे का समाधान किस तरीके से निकलता है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

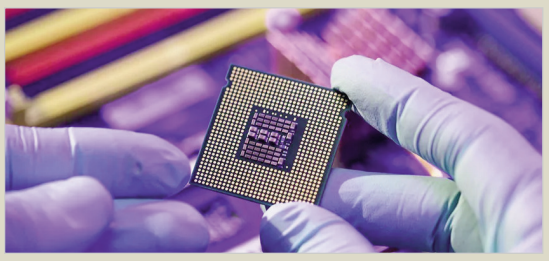

गुजरात की सेमीकंडक्टर नीति विदेशी कंपनियों को कर रही आकर्षितः राज्य सरकार

अहमदाबाद । चिप निर्माता कंपनी माइक्रोन टेक्नोलॉजी का अहमदाबाद के पास साणंद में 2.75 अरब डॉलर का संयंत्र स्थापित करने का निर्णय गुजरात की सेमीकंडक्टर नीति की सफलता को बताता है। राज्य सरकार ने यह बात कही। गुजरात ने पिछले साल जुलाई में राज्य में परिचालन शुरू करने के लिए प्रोत्साहन तथा सब्सिडी की पेशकश करके सेमीकंडक्टर क्षेत्र में नए निवेश आकर्षित करने के लिए एक नीति की घोषणा की थी। सरकारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार मुख्यमंत्री भूपेन्द्र पटेल ने गुजरात सेमीकंडक्टर नीति को पेश किया, जो 2027 तक लागू रहेगी। इस नीति को क्षेत्र में नई परियोजनाओं को आकर्षित करने तथा उन्हें सुविधाजनक बनाने के लिए केंद्र के भारत सेमीकंडक्टर मिशन के अनुरूप तैयार किया गया है। नीति के तहत राज्य सरकार अहमदाबाद के पास धोलेरा सेमीकॉन सिटी स्थापित करेगी। वहां पात्र परियोजनाओं को विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने के लिए सब्सिडी दी जाएगी। यह घोषणा अगले महीने राज्य के वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल इन्वेस्टर समिट से पहले की गई है। विज्ञप्ति में राज्य सरकार ने कहा कि सुविधा में पात्र परियोजनाओं को विनिर्माण इकाइयां स्थापित करने के लिए 200 एकड़ भूमि की पहली खरीद पर 75 प्रतिशत सब्सिडी दी जाएगी। पात्र परियोजनाओं को पहले पांच वर्षों के लिए 12 रुपये प्रति घन मीटर की दर से पानी उपलब्ध कराया जाएगा। उन्हें उत्पादन शुरू होने के पहले 10 वर्षों के लिए बिजली दो रुपये प्रति यूनिट की सब्सिडी पर मिलेगी।

आईपीओ की एनएसई एसएमई पर शानदार शुरुआत

मुंबई । एसेंट माइक्रोसेल के आईपीओ ने शुक्रवार 15 दिसंबर को एनएसई एसएमई पर शानदार शुरुआत की है। एनएसई एसएमई पर कंपनी के शेयर 300 पर लिस्ट हुए, जो 140 रुपये के इश्यू प्राइस से 114.3 फीसदी अधिक है। इसका मतलब है कि जिन निवेशकों ने इस आईपीओ में पैसे लगाया था उनका पैसा एक झटके में दोगुने से भी ज्यादा बढ़ गया। एक्सेंट माइक्रोसेल आईपीओ शुक्रवार 8 दिसंबर को सब्सक्रिप्शन के लिए खुला और मंगलवार, 12 दिसंबर को बंद हुआ। कंपनी ने आईपीओ का प्राइस बैंड 133 से 140 के बीच तय किया था। आईपीओ का लॉट साइज 1,000 शेयर था। निवेशक न्यूनतम 1000 शेयरों के लिए और उसके गुणकों में बोली लगा सकते हैं। एसेंट माइक्रोसल के आईपीओ को निवेशकों से शानदार रिस्पॉन्स मिला था। सब्सक्रिप्शन के आखिरी दिन तक यह इश्यू 362.41 गुना सब्सक्राइब किया गया था। इश्यू में क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स के लिए रिजर्व हिस्सा 118.48 गुना, नॉन इंस्टीट्यूशनल इनवेस्टर्स के लिए रिजर्व हिस्सा 576.70 गुना और रिटेल इनवेस्टर्स के लिए रिजर्व हिस्सा 409.95 गुना सब्स क्राइब हुआ। कंपनी के आईपीओ के तहत 56 लाख फ्रेश इक्विटी शेयर जारी किए गए। बता दें कि इसमें ऑफर फॉर सेल के तहत कोई बिक्री नहीं हुई।

भारतीय कार बाजार में कोरियन कारों की धूम

नईदिल्ली । भारतीय कार बाजार में हमेशा से ही कोरियन कारों की धूम रही है। ऐसी गाडियों में सबसे पहला नाम ह्युंडई की गाड़ियों का ही आता है। इन गाडियों के डिजाइन या फीचर्स ही नहीं इनके इंजन की टेक्नोलॉजी भी खास होती है। वहीं जब बात की जाए कंपनी की सबसे पॉपुलर हैचबैक आई 20 की तो इस कार के दीवाने केवल युवा ही नहीं हैं बल्कि हर वर्ग के लोग हैं। हाल ही में कंपनी ने इस कार का फेसलिफ्ट मॉडल भी लॉन्च किया था। लेकिन कंपनी ने अपनी अपनी इस कार के दीवानों को बड़ा झटका दे दिया है।आई 20 के फेसलिफ्ट मॉडल में कंपनी ने कई सेफ्टी फीचर्स भी दिए थे। कार में 6 एयरबैग, एबीएस, ईबीडी, वीएसएम, हिल असिस्ट कंट्रोल, ईसीएस जैसे फीचर्स दिए गए हैं। अब कार के फ्रंट और रियर बंपर को नया डिजाइन दिया गया है। इसी के साथ कार की फ्रंट ग्रिल को भी नया दिया गया है। कार के इंटीरियर में भी बदलाव देखने को मिलेगा और इसको काफी प्रीमियम लुक दिया गया है। कार के अपहॉल्स्ट्री नए डिजाइन की दी गई है। इसी के साथ कार में सभी सीटों के लिए सीट बेल्ट रिमाइंडर और थ्री वे एडजस्टेबल सीट्स दी गई हैं। आई 20 फेसलिफ्ट में कंपनी ने कई तरह के बदलाव किए हैं और कार के डिजाइन को भी काफी बदल दिया गया है।

विदेशी मुद्रा भंडार 606.9 अरब डॉलर पर पहुंचा, चार महीने का उच्चतम स्तर

मुंबई।

आरबीआई के शुक्रवार को जारी आंकड़ों के मुताबिक, 8 दिसंबर को समाप्त सप्ताह के दौरान देश का विदेशी मुद्रा भंडार 2.816 अरब डॉलर बढ़कर चार महीने के उच्चतम 606.859 अरब डॉलर पर पहुंच गया। एक सप्ताह पहले विदेशी मुद्रा भंडार 6.107 अरब डॉलर उछलकर 604.042 अरब डॉलर हो गया था। 14 जुलाई को समाप्त सप्ताह के बाद से यह सबसे अधिक बढ़त थी। विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि से आरबीआई को रुपये को स्थिर करने में मदद मिलती है। आरबीआई रुपये को दबाव में आने से रोकने के लिए अधिक डॉलर जारी करके हाजिर और वायदा मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप कर सकता है। देश की विदेशी मुद्रा भंडार में किसी भी तेज गिरावट से आरबीआई के पास रुपये के गिरने पर बाजार में

हस्तक्षेप की गुंजाइश कम हो जाती है।

अब बिना वीजा ईरान की यात्रा करेंगे भारतीय

नई दिल्ली । अब ईरान की यात्रा के लिए भारतीय नागरिकों को वीजा की आवश्यक्ता नहीं होगी। एक समाचार एजेंसी के अनुसार ईरानी पर्यटन मंत्रालय का मानना था कि एक खुली द्वार नीति दुनिया के विभिन्न देशों के साथ जुड़ने के ईरान के दृढ़ संकल्प को प्रदर्शित करेगी। समाचार एजेंसी ने यह भी कहा है कि इस फैसले के साथ ऐसे देशों की संख्या बढ़कर 45 हो जाएगी, जिनके नागरिक बिना वीजा प्राप्त किए ईरान की यात्रा कर सकते हैं। समाचार एजेंसी के अनुसार लेबनान, ट्यूनीशिया, भारत, सऊदी अरब और कई मध्य एशियाई, अफ्रीकी और मुस्लिम देशों सहित कुल 33 देशों के लिए ईरान की वीजा आवश्यकता को हटा दिया गया है। सूची में केवल एक पश्चिमी-सहयोगी यूरोपीय राष्ट्र क्रोएशिया शामिल है, जो यूरोपीय संघ और नाटो का एक छोटा सदस्य है। ईरान का यह फैसला दो तेल उत्पादक खाड़ी देशों के बीच वर्षों के तनाव के बीच हुआ है। इसे ईरान और सऊदी अरब के बीच संबंधों में नरमी लाने की दिशा में एक और कदम के तौर पर भी देखा जा रहा है। वीजा आवश्यकताओं को हटाने के फैसले में बहरीन के अलावा संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और कतर के नागरिकों को भी शामिल किया गया था, जिनके साथ तेहरान ने अभी तक पूर्ण संबंध स्थापित नहीं किए हैं। रूसियों को इस वीजा छूट से केवल तभी लाभ होगा जब वे समूहों में देश का दौरा करेंगे। इस घोषणा से पहले ओमानी नागरिक ईरान की वीजा-मुक्त यात्रा करने में सक्षम थे।

अप्रैल-नवंबर में प्रत्यक्ष कर संग्रह बढ़कर 10.64 लाख करोड़ पहुंचा

नई दिल्ली । चालू वित्त वर्ष के पहले आठ महीने में प्रत्यक्ष कर संग्रह बजट अनुमान (बीई) के 10.64 लाख करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। वित्त मंत्री ने कहा कि अप्रैल-नवंबर के दौरान नेट टैक्स कलेक्शन 10.64 लाख करोड़ रुपये रहा। यह पछिले साल की समान अवधिकी तुलना में 23.4 फीसदी ज्यादा है। रिफंड जारी करने से पहले सकल संग्रह अप्रैल-नवंबर की अवधि में 17.7 परसेंट बढ़कर 12.67 लाख करोड़ रुपये हो गया.चालू वित्त वर्ष में अप्रैल से नवंबर तक 2.03 लाख करोड़ रुपये का रिफंड जारी किया गया। मंत्रालय ने कहा कि जिन मामलों में रिफंड शुरू में विफल हो गया था, उनके लिए विशेष पहल की गई और बाद में वैध बैंक खातों में रिफंड जारी किया गया। चालू वित्त वर्ष 2022-23 में प्रत्यक्ष कर संग्रह 18.23 लाख करोड़ रुपये और अप्रत्यक्ष कर संग्रह 15.38 लाख करोड़ रुपये रहने का अनुमान है। वित्त वर्ष 2023-24 के लिए 31 अक्टूबर तक दाखिल किए गए इनकम टैवे स रिटर्न भी रिकॉर्ड आंकड़े पर पहुंच गए हैं। आठ महीने के दौरान आईटीआर की संख्या बढ़कर 76.5 मिलियन हो गई।

970 अंक की बढ़त के साथ 71 हजारी हुआ शेयर बाजार

273.95 अंक की बढ़त के साथ निफ्टी में हुआ 21 हजारी

मुंबई ।

चौतरफा लिवाली के बदौलत हफ्ते के आखिरी कारोबारी दिन शुक्रवार को मुंबई शेयर बाजार अपने नए ऑल टाइम हाई पर पहुंच गया। अमेरिकी फेडरल रिजर्व के फैसले का सकारात्मक असर शुक्रवार को भी भारतीय शेयर बाजार पर दिखाई दिया। अमेरिकी फेडरल रिजर्व ने ब्याज दरों में कोई बदलाव नहीं किया, लेकिन बैंक की तरफ से आए कमेंट्री के बाद बाजार यह मान रहा है कि अगले साल अमेरिका में कम से कम तीन बार ब्याज दरों में कटौती की जा सकती है।

शुक्रवार के कारोबार में बीएसई सेंसेक्स 970 अंक मजबूत हुआ। वहीं, निफ्टी में भी 274 अंक की बढ़ोतरी हुई हैं। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप और स्मॉलकैप सूचकांक भी क्रमशः 36,229 और 41,984 के नए ऑलटाइम हाई पर पहुंच गए। इसमें 1 और 0.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई। व्यापक बाजारों में, बीएसई मिडकैप सूचकांक नेगेटिव सेंटीमेंट के साथ सपाट बंद हुआ, जबकि बीएसई स्मॉलकैप सूचकांक 0.58 प्रतिशत बढ़कर बंद हुआ। दिन के दौरान सूचकांक क्रमशः 36,421 और 42,219 की रिकॉर्ड ऊंचाई पर पहुंच गए थे।

बीएसई का 30 शेयरों वाला मानक सूचकांक सेंसेक्स (सेंसेक्स) 969.55 अंक की

भारी बढ़त के साथ 71,483.75 अंक पर बंद हुआ। सेंसेक्स में शुक्रवार को 70,655.97 और 71,605.76 के रेंज में कारोबार हुआ। वहीं, दूसरी ओर नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) के निफ्टी में भी 273.95 अंक की बढ़त दर्ज की गई। निफ्टी दिन के अंत में 21,456.65 अंक पर बंद हुआ। निफ्टी में शुक्रवार को 21,235.30 और 21,492.30 के रेंज में कारोबार हुआ।

मोटोरोला की 2024 से भारत से स्मार्टफोन निर्यात दोगुना करने की योजना

मुंबई ।

मोटोरोला अगले साल से भारत से स्मार्टफोन निर्यात दोगुना करने की योजना बना रहा है। एक रिपोर्ट में कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी के हवाले से यह जानकारी दी। बता दें कि चीनी कंपनी लेनोवो के मालिकाना हक वाला स्मार्टफोन ब्रांड मोटोरोला मोबाइल फोन मैन्युफैक्चरिंग को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की तरफ से शुरू की गई पीएलआई योजना का अग्रणी लाभार्थी है। मोटोरोला के एशिया-प्रशांत के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि यह नॉर्थ अमेरिका में भारतीय शिपमेंट को बढ़ाकर हासिल किया जाएगा। यह एक ऐसा बाजार है जिसे मुख्य रूप से चीन से आपूर्ति की जाती है। नॉर्थ अमेरिका भारत से हमारा प्राथमिक निर्यात बाजार है। वर्तमान में, हम अपनी क्षमता का 20-25 फीसदी नॉर्थ अमेरिका को निर्यात कर रहे हैं और हर साल, हम ग्रोथ के मामले में प्रगति देख रहे हैं। हम अगले साल 2024 में अपना निर्यात दोगुना करने की योजना बना रहे हैं। बाजार विश्लेषकों के मुताबिक मोटोरोला ने वर्ष 2022 में भारत से 10 लाख से अधिक स्मार्टफोन निर्यात किए, जो स्थानीय इलेक्ट्रॉनिक्स अनुबंध निर्माता डिक्सन टेक्नोलॉजीज द्वारा निर्मित हैं। इस वित्त वर्ष में अक्टूबर तक यह पहले ही 800,000 स्मार्टफोन का निर्यात कर चुका है। उन्होंने कहा कि मोटोरोला का उद्देश्य भारतीय बाजार में अपनी बिक्री की तुलना में निर्यात में तेज वृद्धि बनाए रखना है। अगर हम घरेलू बिक्री में 50-60 प्रतिशत की वृद्धि देख रहे हैं, तो निर्यात

घरेलू बिक्री की तुलना में तेजी से बढ़ेगा।

अडाणी की एईसीटीपीएल में हिस्सेदारी खरीदेगी मेडिटेरेनियन शिपिंग कंपनी

नई दिल्ली ।

अडाणी पोर्ट्स एंड स्पेशल इकनॉमिक ज़ोन लिमिटेड (एपीएसईजेड) ने शुक्रवार को कहा कि मेडिटेरेनियन शिपिंग कंपनी की सहयोगी कंपनी मुंडी लिमिटेड 247 करोड़ रुपये में अडाणी एन्नोर कंटेनर टर्मिनल प्राइवेट लिमिटेड (एईसीटीपीएल) में 49 प्रतिशत हिस्सेदारी का अधिग्रहण करेगी। एपीएसईजेड के अनुसार इस संबंध में एक शेयर खरीद समझौते पर 14 दिसंबर 2023 को हस्ताक्षर किए गए। बयान में कहा गया कि लेन-देन के लिए अभी विनियामक की मंजूरी की आवश्यकता है। लेन-देन के तीन से चार महीनों में पूरा होने की उम्मीद है। इसके पूरा होने के बाद एपीएसईजेड की एईसीटीपीएल में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी होगी। मुंद्रा बंदरगाह पर सीटी3 कंटेनर टर्मिनल के लिए संयुक्त उद्यम के बाद यह टीआईएल के साथ एपीएसईजेड की दूसरी रणनीतिक साझेदारी है। एपीएसईजेड के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) एवं पूर्णकालिक निदेशक करण अडाणी ने कहा कि दुनिया की सबसे बड़ी शिपिंग कंपनी (एमएससी) के साथ हमारा सहयोग पारदर्शी व्यावसायिक दृष्टिकोण के जरिए क्षेत्रीय विकास में तेजी लाने की एपीएसईजेड के मजबूत दृष्टिकोण को दर्शाता है।

किया को अगले साल बिक्री में 10 फीसदी बढ़ोतरी की उम्मीद

मुंबई ।

कोरियाई कार कंपनी किया भारत में अगले साल बिक्री में कम से कम 10 फीसदी बढ़ोतरी की उम्मीद कर रही है ले किन इसके लिए किफायती सेगमेंट में कार लाने की उसकी कोई योजना नहीं है। 10 लाख रुपये से कम कीमत में कई हैचबैक और सिडैन भारतीय बाजार में हैं ले किन कंपनी इन सेगमेंट में उतरने के लिए तैयार नहीं है। उसका जोर प्रीमियम कॉम्पैक्ट एसयूवी और इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) पर ही रहेगा। किया इंडिया के नेशनल हेड (सेल्स ऐंड मार्केटिंग) हरदीप सिंह बराड़ ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2023 में कंपनी को 2.25 लाख वाहन बिकने की उम्मीद है। इसमें 70,000 वाहनों का निर्यात भी शामिल है। अगले साल बिक्री में कम से कम 10 प्रे तिशत वृद्धि का उसका अनुमान है। मगर बिक्री बढ़ाने के लिए प्रवेश स्तर और किफायती कार सेगमेंट में कदम रखने की कोरियाई कंपनी की कोई योजना नहीं है। बराड़ ने कहा कि 10 साल पहले हैचबैक और सिडैन की 65 फीसदी हिस्सेदारी थी, जो अब गिरकर 30 फीसदी से भी कम रह गई है। इस समय भारत में स्पोर्ट्स यूटिलिटी व्हीकल का ही बाजार बढ़ रहा है, इसलिए किया एसयूवी ही लाएगी मगर दूसरी कंपनियों की तरह इंट्री लेवल पर बेहद कम कीमत की एसयूवी शायद ही आए। किया ने अपनी कॉम्पैक्ट एसयूवी सॉनेट के नए संस्करण से पर्दा हटा दिया है। नई सॉनेट में

डीजल इंजन के साथ मैनुअल ट्रांसमिशन एक बार फिर दिया गया है। साथ ही इसके सभी मॉडलों में 6 एयरबैग के साथ नई ऑटोमैटिक सुरक्षा प्रणाली एडैस भी दी गई है। नई एसयूवी की प्री बुकिंग 20 दिसंबर से शुरू होगी और अगले साल इसकी डिलिवरी आरंभ कर दी जाएगी। मौजूदा सॉनेट 8 लाख से 14 लाख रुपये की आती है। नए संस्करण की कीमत का खुलासा नए साल पर ही किया जाएगा।

सोने में तेजी कायम, चांदी में मामूली बढ़त

सोना 62500 प्रति 10 ग्राम और चांदी 75000 रुपए किलो

नई दिल्ली ।

सोने की कीमत में शुक्रवार को बढ़त देखने को मिल रही है। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर फरवरी 2024 फ्यूचर में डिलीवरी वाला सोना 46 रुपये की बढ़त के साथ 62500.00 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार हो रहा था। इससे पिछले सत्र में फरवरी 2024 कॉन्ट्रैक्ट वाले सोने का भाव 62454.00 रुपये प्रति 10 ग्राम के लेवल पर रहा था। इसी तरह अप्रैल 2024 सीरीज़ के कॉन्टैक्ट में डिलीवरी वाले सोने में 132 रुपये की अच्छी बढ़त के साथ 62955.00 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार हो रहा था। इससे पिछले सत्र में अप्रैल कॉन्ट्रैक्ट वाले सोने का भाव 62823.00 रुपये प्रति 10 ग्राम पर रहा था। एमसीएक्स पर मार्च 2024 में डिलीवरी वाली चांदी में 4 रुपये की बढ़त के साथ 75080.00 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार हो रहा था। इससे पिछले सत्र में मार्च 2024 कॉन्ट्रैक्ट वाली चांदी की कीमत 75076.00 रुपये प्रति किलोग्राम पर रही थी। इसी तरह मई 2024 सीरीज़ में डिलीवरी वाली चांदी में 14 रुपये की बढ़त के साथ 76149.00 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार हो रहा था। इससे पिछले सत्र में मई कॉन्ट्रैक्ट वाली चांदी की कीमत 76135.00 रुपये प्रति किलोग्राम पर रही थी। कॉमेक्स पर फरवरी 2024 में डिलीवरी वाले गोल्ड में 0.22 फीसदी की बढ़त के साथ 2,049.50 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कॉमेक्स पर मार्च 2023 में डिलीवरी वाली चांदी में 0.02 फीसदी की मामूली गिरावट के साथ 24.380 डॉलर प्रति औंस के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

एप्पल लेकर आया 'स्टोलेन डिवाइस प्रोटेक्शन' ऑप्शन

-आईफोन को चोरों से बचाने वाला है ये खास फीचर

नईदिल्ली ।

महंगे स्मार्टफोन बनाने वाली कंपनी एप्पल आईफोन सिक्योरिटी को बढ़ाते हुए 'स्टोलेन डिवाइस प्रोटेक्शन' ऑप्शन लाई है। ये खास फीचर आईफोन को चोरों से बचाने वाला है। इस शानदार फीचर को अनलॉक करने के लिए पासकोड इनपुट और फेस आईडी ऑथंटिकेशन दोनों की जरूरत होती है। इसको चुनने वाले यूजर्स आईक्लाउड किचेन पासवर्ड, फ़ैक्टरी रीसेट, भुगतान के तरीके और बायोमेट्रिक लॉक के पीछे 'लॉस्ट मोड' का इस्तेमाल कर सकेंगे। अन्य संवेदनशील एक्शन करने के लिए जैसे कि ऐप्पल आईडी पासवर्ड बदलना, आईफोन पासकोड बदलना, या फाइंड माई को बंद करना, के लिए फेस आईडी ऑथंटिकेशन की आवश्यकता होगी और यदि आईफोन यूजर की लोकेशन (जिस जगह यूजर अक्सर आता जाता रहता है) पर नहीं है और फेस ऑथंटिकेशन नहीं हो पा रहा तो प्रक्रिया को दोहराने के लिए एक घंटे तक इंतजार करना होगा। एक रिपोर्ट में बताया गया था कि कैसे चोर पीड़ितों की जासूसी करते हैं और उनके आईफोन पासकोड प्राप्त करने के लिए उनसे

दोस्ती करते हैं, जिसकी वजह से संभवतः एप्पल द्वारा 'चोरी डिवाइस सुरक्षा' को शामिल किया गया है। यह फीचर वर्तमान में आईओएस वर्शन 17.3 बीटा पर टेस्टिंग में है और चुनिंदा यूजर्स के लिए उपलब्ध है।

आने वाले महीनों में अगले प्रमुख आईओएस अपडेट के साथ सिलेक्ट आईफोन मॉडलों के लिए 'स्टोलन डिवाइस प्रोटेक्शन' फीचर शुरू होने की उम्मीद है।एप्पल के स्कॉट रैडक्लिफ ने आईफोन सिक्योरिटी पर जोर देते हुए कहा, 'हमारे डेटा एन्क्रिप्शन ने इंडस्ट्री स्टैंडर्ड सेट किया है। चोर उस आईफोन का डेटा बिना पासकोड जाने एक्सेस नहीं कर सकता। वहीं, अगर चोर पासकोड एंटर करते देख ले और फिर डिवाइस चुराए तब भी, डेटा एक्सेस कर पाना लगभग असंभव है। क्योंकि इस डिवाइस में एडवांस लेयर होगी जो इसके डेटा को एक्सेस बिल्कुल भी नहीं करने देगी।'

अदाणी ग्रीन एनर्जी ने दो 'स्टेप-डाउन' अनुषंगी कंपनियों के विलय की घोषणा की

मुंबई ।

अदाणी ग्रीन एनर्जी ने दो 'स्टेप-डाउन' अनुषंगी कंपनियों अदाणी रिन्यूएबल एनर्जी फिफ्टी वन लिमिटेड और अदाणी रिन्यूएबल एनर्जी फिफ्टी फाइव लिमिटेड के विलय की गुरुवार को घोषणा की। 'स्टेप-डाउन अनुषंगी कंपनी से तात्पर्य प्रत्यक्ष अनुषंगी की अनुषंगी कंपनियों से है। अदाणी ग्रीन एनर्जी ने बताया कि कंपनी की पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी अदाणी सौर ऊर्जा (केए) लिमिटेड ने 13 दिसंबर 2023 को अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी अदाणी रिन्यूएबल एनर्जी फिफ्टी वन लिमिटेड (एआरई51एल) का विलय कर लिया।

कंपनी ने बताया, उसकी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी अदाणी रिन्यूएबल एनर्जी होल्डिंग नाइन लिमिटेड ने 13 दिसंबर 2023 को अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी अदाणी रिन्यूएबल एनर्जी फिफ्टी फाइव लिमिटेड (एआरई55एल) का खुद में विलय किया। नई

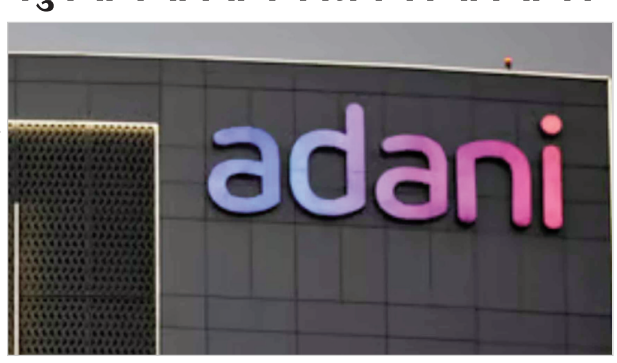

अनुषंगी कंपनियों का मुख्य काम पवन ऊर्जा, सौर ऊर्जा या ऊर्जा के अन्य नवीकरणीय स्रोतों का उपयोग करके किसी भी प्रकार की बिजली या विद्युत ऊर्जा का उत्पादन, विकास, परिवर्तन, वितरण, संचारण, बिक्री, आपूर्ति करना है।

बीसीसीआई का धोनी को सम्मान...उनके साथ उनकी जर्सी नंबर 7 भी हुई रिटायर

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी को सम्मान देकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने 7 नंबर की जर्सी को रिटायर करने का फैसला किया है। यह जर्सी धोनी का पर्याय बन गई जो आईसीसी आयोजनों के मामले में भारत के सबसे सफल कप्तान बने हुए हैं। जबकि महान सचिन तेंदुलकर की नंबर 10 जर्सी को भारतीय बोर्ड ने पहले ही रिटायर कर दिया था। भारतीय टीम में विकेटकीपर बल्लेबाज के योगदान का सम्मान करते हुए धोनी की नंबर 7 जर्सी को भी सूची में जोड़ने का निर्णय लिया गया है।

बताया जाता हैं कि बीसीसीआई ने भारतीय टीम के खिलाड़ियों से कहा है कि वे भारतीय जर्सी पहनते समय अपनी पीठ पर नंबर 7 नहीं पहन सकते, जैसे किसी को भी नंबर 10 जर्सी चुनने की अनुमति नहीं थी। रिपोर्ट ने भी पुष्टि की है कि नंबर 7 जर्सी भारतीय खिलाड़ियों के लिए उपलब्ध नहीं है। रिपोर्ट में कहा गया, युवा खिलाड़ियों और वर्तमान भारतीय टीम के खिलाड़ियों को धोनी की नंबर 7 जर्सी नहीं चुनने के लिए कहा गया है। बीसीसीआई ने खेल में उनके योगदान के लिए धोनी की जर्सी को रिटायर करने का फैसला किया है। नए खिलाड़ी को नंबर 7 नहीं मिलेगा है, और बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारी ने बताया, नंबर 10 पहले से ही उपलब्ध नंबरों की सूची से बाहर था।

टीम में अपने शुरुआती दिनों के दौरान तेज गेंदबाज शार्दुल ठाकुर ने थोड़े समय के लिए 10 नंबर की जर्सी पहनी थी। हालांकि उस बहुचर्चित प्रकरण के बाद जर्सी को हटा दिया गया था। नंबर 7 जर्सी के मामले में बीसीसीआई ने तेजी से कार्रवाई की और नंबर को खिलाड़ियों की पहुंच से दूर कर दिया। बीसीसीआई अधिकारी ने पुष्टि की कि वर्तमान में भारतीय टीम के खिलाड़ियों को कुल 60 नंबर आवंटित किए गए हैं।

बीसीसीआई के अधिकारी के हवाले से रिपोर्ट में कहा गया, वर्तमान में भारतीय टीम में नियमित खिलाड़ियों और दावेदारों को 60 से अधिक नंबर दिए गए हैं। इसकारण भले ही कोई खिलाड़ी लगभग एक साल या उससे भी अधिक समय के लिए टीम से बाहर हो, हम उसका नंबर किसी नए खिलाड़ी को नहीं देते हैं।

नोवाक जोकोविच और आर्यना सबालेंका को आईटीएफ विश्व चैंपियन पुरस्कार

लंदन (एजेंसी)। नोवाक जोकोविच और आर्यना सबालेंका को इस सत्र में चारों ग्रैंडस्लैम टूर्नामेंट के एकल वर्ग में कम से कम सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए अंतरराष्ट्रीय टेनिस महासंघ (आईटीएफ) के 2023 के विश्व चैंपियन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जोकोविच ने रिकॉर्ड आठवीं बार एटीपी रैंकिंग में नंबर एक पर काबिज रहते हुए सत्र का अंत किया। उन्होंने इस सत्र में ऑस्ट्रेलियाई ओपन, फ्रेंच ओपन और अमेरिकी ओपन के खिताब जीतकर अपने कुल ग्रैंडस्लैम खिताब की संख्या 24 पर पहुंचाई। वह विंबलडन में उपविजेता रहे थे। जोकोविच ने आठवीं बार आईटीएफ विश्व चैंपियन का पुरस्कार हासिल किया और यह भी रिकॉर्ड है।

सबालेंका ने पहली बार यह पुरस्कार हासिल किया। उन्होंने इस साल ऑस्ट्रेलियाई ओपन के रूप में अपना पहला ग्रैंडस्लैम खिताब जीता था। वह अमेरिकी ओपन में उपविजेता रही जबकि फ्रेंच ओपन और विंबलडन के सेमीफाइनल में पहुंची थी। वह सितंबर में पहली बार अपने करियर में डब्ल्यूटीए रैंकिंग में शीर्ष पर पहुंची थी। उन्होंने सत्र का अंत इगा स्वियातेक के बाद दूसरे नंबर पर रहते हुए किया।

साउथ अफ्रीका में होने वाली टेस्ट सिरीज में मोहम्मद शमी का नाम नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। साउथ अफ्रीका के प्रवास पर गई भारतीय क्रिकेट टीम टी20 और वनडे के बाद टेस्ट सीरीज खेलेगी। रोहित शर्मा की कप्तानी में टेस्ट सीरीज खेलने उतरने वाली टीम को एक बड़ा झटका लगता नजर आ रहा है। जानकारी के मुताबिक टीम के अनुभवी तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी दौरे से बाहर हो सकते हैं। बताया जा रहा है कि वह साउथ अफ्रीका दौरे के लिए उड़ान नहीं भर पाएंगे। भारतीय टीम को साउथ अफ्रीका के खिलाफ इस साल के अंत में खेले जाने वाले पहले टेस्ट मैच से पहले बुरी खबर मिली है। 26 दिसंबर यानी बॉक्सिंग डे पर टीम इंडिया साउथ अफ्रीका के साथ दो मैचों की टेस्ट सीरीज खेलने उतरेगी। पहले मुकाबले में रोहित शर्मा की टीम मेजबान पर दबाब बनाना चाहेगी लेकिन इसके लिए उनके पास अहम हथियार नहीं होगा। टीम इंडिया के स्टार तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी के टेस्ट सीरीज से बाहर होने की खबर है।

भारत और साउथ अफ्रीका के बीच खेली जाने वाली टेस्ट सीरीज में मोहम्मद शमी चोटिल होने की वजह से नहीं खेल पाएंगे। क्रिकबज की खबर के मुताबिक टीम इंडिया का यह स्टार तेज गेंदबाज टखने की चोट से अब तक नही उबर पाया है। चोटिल होने के बाद भी आईसीसी वनडे वर्ल्ड कप में उन्होंने मुकाबला खेला था। वनडे और टी20 में खेलने वाली टीम के बाद टेस्ट टीम में चुने गए खिलाड़ी उडान भरने वाले हैं। 15 दिसंबर को सभी खिलाड़ियों को कप्तान रोहित शर्मा के साथ रवाना होना है। खबरों की माने तो इस लिस्ट में शमी का नाम नहीं होगा।

भारतीय टीम साउथ अफ्रीका के दौरे पर दो टेस्ट मैच खेलने वाली है। पहला मुकाबला साल के अंत में 26 से 30 दिसंबर के बीच सेंचुरियन के सुपरस्पोर्ट पार्क में होगा है। दूसरे मुकाबले की बात करें तो यह अगले साल भारत का पहला मुकाबला होने वाला है। 3 से 7 जनवरी 2024 के बीच केपटाउट के न्यूलैंड्स स्टेडियम में इसे खेला जाना है।

इंटरनेशनल क्रिकेट में कुलदीप यादव ने बनाई 4 हैट्रिक, आईपीएल में भी मचाई धूम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय टीम के 'मिस्ट्री बॉलर' कुलदीप यादव जिनकी उम्र अभी 28 वर्ष है, ने इंटरनेशलन क्रिकेट में 4 हैट्रिक बनाई है। आईपीएल में भी उन्होंने खूब धूम मचाई है। करीब सात साल के इंटरनेशनल करियर में अपनी भरपूर क्षमता दिखाने के बावजूद कुलदीप यादव को भले ही टेस्ट क्रिकेट में कम मौका मिला हो लेकिन वनडे और टी20आई में उन्होंने विकेटों का अंबार लगाया है। 14 दिसंबर 1994 को यूपी के कानपुर में जन्मे कुलदीप जब 10 साल की कच्ची उम्र में क्रिकेट की कोचिंग के लिए गए तो बाएं हाथ के तेज गेंदबाज बनना चाहते थे। हालांकि पाकिस्तान के महान तेज गेंदबाज वसीम अकरम उनके आदर्श हुआ करते थे लेकिन क्रिकेट के

शुरुआती दौर में ही कोच कपिल पांडे ने भांप लिया था कि कुलदीप में अच्छा तेज गेंदबाज बनने लायक 'कौशल' नहीं है। उन्होंने कुलदीप को रिस्ट स्पिनर बनने की सलाह दी। कुलदीप ने सलाह पर अमल करते हुए अपनी गेंदबाजी को तराशने के लिए घंटों नेट पर मेहनत की और खुद को देश के बेहतरीन चाइनामैन बॉलर के तौर पर स्थापित किया।

कुलदीप यादव आज शॉर्टर फॉर्मेट के क्रिकेट में भारतीय टीम की आवश्यकता बन चुके हैं। वर्ल्डकप 2023 में कुलदीप यादव की शानदार गेंदों का सामना करना विपक्षी बल्लेबाजों के लिए मुश्किल रहा। टूर्नामेंट के 11 मैचों में उन्होंने 28.26 के औसत और 4.45 की इकोनामी से 15 विकेट हासिल किए। क्रिकेट के जानकार बताते हैं कि किसी भी गेंदबाज के लिए करियर में एक ही हैट्रिक लेना बड़ी उपलब्धि माना जाता है लेकिन कुलदीप चार बार हैट्रिक ले चुके हैं जो एक बड़ी उपलब्धि है। एक बार अंडर-19 वर्ल्डकप में भारतीय टीम के सदस्य के तौर पर, एक बार इंडिया ए की ओर से न्यूजीलैंड के खिलाफ, दो बार भारतीय सीनियर टीम की ओर से खेलते हुए उन्होंने ऐसा किया है। वर्ष 2014 में भारतीय अंडर-19 टीम के सदस्य के तौर पर स्कॉटलैंड के खिलाफ इंटरनेशनल क्रिकेट की पहली हैट्रिक ली। उन्होंने लगातार गेंदों पर स्कॉटिश टीम के फैरार, स्टर्लिंग और एलेक्स बाम को आउट करके हैट्रिक दर्ज की थी।

मेसी की छह जर्सी 78 लाख डॉलर में बिकी, विश्व कप में पहनी थी

न्यूयॉर्क। अर्जेंटीना के दिग्गज फुटबॉलर लियोनेल मेसी की पिछले साल विश्व कप के दौरान पहनी गई छह जर्सी नीलामी में 78 लाख डॉलर में बिकी। नीलामी करने वाली संस्था सोथबी ने यह घोषणा की। सोथबी ने बताया कि मेसी ने इन शर्ट को

कतर में 2022 में खेले गए फीफा विश्व कप के पहले चरण के मैचों में पहना था। इस साल खेल से जुड़ी वस्तुओं की नीलामी में यह सर्वाधिक कीमत पर बिकने वाली वस्तु रही। अर्जेंटीना ने विश्व कप फाइनल में फ्रांस को पेनल्टी शूटआउट में हराकर अपना तीसरा खिताब जीता था। निर्धारित समय तक दोनों टीम 3-3 से बराबरी पर थी जिसके बाद पेनल्टी शूटआउट का सहारा लिया गया था। मेसी की इन शर्ट के लिए विजेता बोली लगाने वालों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी गई है।

मार्श शतक से चूके, ऑस्ट्रेलिया ने पहली पारी में 487 रन

पर्थ। ऑलराउंडर मिशेल मार्श अपने चौथे टेस्ट शतक से चूक गए हैं, लेकिन उनकी 90 रन की शानदार पारी की मदद से ऑस्ट्रेलिया ने पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट क्रिकेट मैच के दूसरे दिन शुक्रवार को अपनी पहली पारी में 487 रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया ने लंच तक सात विकेट पर 476 रन बनाए थे,लेकिन दूसरे सत्र में टीम ने 20 गेंद और 11 रन के अंदर अपने बाकी बचे तीन विकेट गंवा दिए। इसमें मार्श का विकेट भी शामिल था जिन्हें अपना पहला टेस्ट मैच खेल रहे खुर्रम शहजाद (83 रन देकर दो विकेट) ने दूसरे सत्र की पहली गेंद पर बोल्ड किया। मार्श ने अपनी 107 गेंद की पारी में 15 चौके और एक छक्का लगाया। अपना पहला टेस्ट मैच खेल रहे एक अन्य तेज गेंदबाज आमिर जमाल ने इसके बाद बाकी बचे दो विकेट लेने में देर नहीं लगाई। उन्होंने 111 रन देकर 6 विकेट हासिल किए। ऑस्ट्रेलिया ने सुबह 5 विकेट पर 346 रन से अपनी पारी आगे बढ़ाई थी। पाकिस्तान ने सुबह के सत्र में दो विकेट हासिल किए थे और यह दोनों सफलताएं उस जमाल ने दिलाई थी। तेज गेंदबाज ने एलेक्स केरी (34) और मिशेल स्टार्क (12) दोनों को बोल्ड किया। ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी का आकर्षण सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर का शतक रहा। उन्होंने 211 गेंद पर 164 रन की पारी खेली।

आईपीएल 2024 से पहले मुंबई इंडियंस का बड़ा ऐलान, हार्दिक पांड्या को सौंपी कप्तानी

मुंबई। दो साल बाद मुंबई इंडियंस में कदम रखने वाले हार्दिक पांड्या को आईपीएल के 2024 संस्करण से पहले फ्रेंचाइजी ने बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी है। आईपीएल 2024 से पहले मुंबई इंडियंस ने हार्दिक पांड्या को कप्तान बना दिया है। पांड्या पांच बार के विजेता कप्तान रोहित शर्मा की जगह लेंगे। इस परिवर्तन पर टिप्पणी करते हुए मुंबई इंडियंस के वैश्विक प्रदर्शन प्रमुख महेला जयवर्धने ने कहा, 'यह विरासत निर्माण और भविष्य के लिए तैयार रहने के मुंबई इंडियंस के प्रति सच्चे रहने का हिस्सा है। मुंबई इंडियंस को सचिन से लेकर हरभजन और रिकी से लेकर रोहित तक हमेशा असाधारण नेतृत्व का आशीर्वाद मिला है जिन्होंने तत्काल सफलता में योगदान देने के साथ-साथ भविष्य के लिए टीम को मजबूत करने पर भी नजर रखी। इसी विचारधारा के अनुरूप हार्दिक पंड्या आईपीएल 2024 सीज़न के लिए मुंबई इंडियंस की कप्तानी संभालेंगे।' उन्होंने आगे कहा, 'हम रोहित शर्मा के असाधारण नेतृत्व के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं। 2013 से मुंबई इंडियंस के कप्तान के रूप में उनका कार्यकाल असाधारण से कम नहीं है। उनके नेतृत्व ने न केवल टीम को अद्वितीय सफलता दिलाई है बल्कि आईपीएल के इतिहास में सबसे बेहतरीन कप्तानों में से एक के रूप में अपनी जगह भी मजबूत की है। उनके मार्गदर्शन में मुंबई इंडियंस अब तक की सबसे सफल और पसंदीदा टीमों में से एक बन गई। हम एमआई को और मजबूत करने के लिए मैदान के अंदर और बाहर उनके मार्गदर्शन और अनुभव की प्रतीक्षा करेंगे। हम एमआई के नए कप्तान के रूप में हार्दिक पांड्या का स्वागत करते हैं और उन्हें शुभकामनाएं देते हैं।'

दीप्ति शर्मा के हरफनमौला खेल से भारत मजबूत स्थिति में

नवी मुंबई (एजेंसी)। दीप्ति शर्मा के हरफनमौला खेल से भारतीय महिला टीम इंग्लैंड के खिलाफ एकमात्र महिला टेस्ट के दूसरे दिन शुक्रवार को अपनी स्थिति बेहद मजबूत कर ली। अभी दो दिन का खेल बचा है और दूसरी पारी में अब तक 478 रन की बढ़त बनाने के बाद भारत के पास घरेलू सरजमीं पर पहली बार इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट जीतने का मौका है।

दीप्ति ने भारतीय टीम की पहली पारी में 113 गेंद में 67 रन बनाकर टीम के स्कोर को 428 रन तक पहुंचाने में अहम भूमिका निभाने के बाद अपनी शानदार फिरकी से इंग्लैंड की बल्लेबाजी क्रम को झकझोर दिया। उन्होंने 5.3 ओवर में चार मेडन और सात रन देकर पांच विकेट चटकाये जिससे इंग्लैंड की पहली पारी महज 136 रन पर सिमट गई।

इंग्लैंड की टीम एक समय तीन विकेट पर 108 रन बनाकर अच्छी स्थिति में थी लेकिन इसके बाद दीप्ति के कहर से उसकी पारी सस्ते में निपट गई। टीम ने 10 रन के अंदर आखिरी छह विकेट गंवा दिये। स्नेह राणा ने 25 रन देकर दो जबकि रेणुका सिंह और पूजा वस्त्राकर ने एक-एक विकेट चटकाए।

भारत ने पहली पारी में 292 रन की बड़ी बढ़त लेने के बाद इंग्लैंड को फालोऑन करने की जगह दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने का फैसला किया। टीम ने दिन का खेल खत्म होने तक अपनी दूसरी पारी में छह विकेट पर 186 रन

बना लिये। उसकी कुल बढ़त 478 रन की हो गयी और अभी चार विकेट शेष है। स्टंप्स के समय कप्तान हरमनप्रीत कौर 44 और हरफनमौला पूजा वस्त्राकर 17 रन बनाकर क्रीज पर मौजूद हैं। दोनों ने सातवें विकेट के लिए अब तक 53 रन की साझेदारी कर ली है।

दिन का खेल आगे बढ़ने के साथ पिच से स्पिनरों को अधिक मदद मिल रही थी। असामान्य उछाल के कारण बल्लेबाजों को परेशानी कर सामना करना पड़ रहा था। भारत को दूसरी पारी में स्मृति मंधाना (26) और शेफाली वर्मा (33) ने 61 रन की साझेदारी कर अच्छी शुरूआत दिलायी लेकिन इंग्लैंड की स्पिन गेंदबाजों ने इसके बाद भारतीयों को परेशान किया। चार्ली डीन (68 रन पर चार विकेट) और अनुभवी सोफी एक्लेस्टोन (76 रन पर दो विकेट) ने विकेट लिए। जेमिमा रोड्रिग्स ने भी बल्ले से 27 रन का योगदान दिया।

पहली पारी में अर्धशतक जड़ने वाली शुभा सतीश अंगूली में चोट के कारण बल्लेबाजी के लिए नहीं उतरी जिससे भारत को अपने बल्लेबाजी क्रम में बदलाव करना पड़ा। मैच के दूसरे दिन कुल 19 विकेट गिरे जिसमें भारत की पहली पारी के तीन विकेट शामिल है। इसमें से 15 विकेट स्पिनरों के नाम रहे। भारत ने दिन की शुरुआत पहली पारी में सात विकेट पर 410 रन से आगे की लेकिन इंग्लैंड के गेंदबाजों ने 10.3 ओवर में 18 रन के अंदर बाकी बचे तीनों विकेट चटका लिए।

तेज गेंदबाज रेणुका ने इंग्लैंड को पारी के तीसरे ओवर में ही पहला झटका दिया। उन्होंने सोफी डंकली (11) को बोल्ड किया जबकि कप्तान हीथर नाइट (11) वस्त्राकर की गेंद पर पगबाधा हुई। नेट स्किवेर ब्रंट (59) ने इसके बाद सलामी बल्लेबाज टैमी ब्यूमोंट (10) के साथ 51 रन की साझेदारी करके मैच में इंग्लैंड को वापसी कराने की कोशिश की। ब्यूमोंट हालांकि गफलत का शिकार होकर रन आउट हो गई। ब्रंट और डैनी व्याट (19) ने आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए टीम को 100 रन के पार पहुंचाया। दीप्ति ने पारी के 26वें ओवर में व्याट को शॉर्ट लेग पर जेमिमा के हाथों कैच कराया। स्नेहा ने ब्रंट की 70 गेंद में 10 चौके जड़ी पारी को बोल्ड कर खत्म किया। दीप्ति ने इसके बाद पुछल्ले बल्लेबाजों को कोई मौका नहीं दिया।

मिशन ओलंपिक : प्रियंका गोस्वामी को ऑस्ट्रेलिया में अभ्यास करने की अनुमति मिली

नई दिल्ली। खेल मंत्रालय के मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने पैदल चाल की एथलीट प्रियंका गोस्वामी के ऑस्ट्रेलिया में कोच ब्रेंट वालेस की निगरानी में अभ्यास करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। पेरिस ओलंपिक के लिए क्वालीफाई कर चुकी प्रियंका ऑस्ट्रेलिया के कैनबरा के निकट स्थित प्रशिक्षण केंद्र में अभ्यास करेगी। उनको मिलने वाली वित्तीय सहायता में हवाई किराया, भोजन-आवास की लागत, खेल विज्ञान सहायता के लिए व्यय, कोचिंग शुल्क सहित अन्य खर्च शामिल होंगे। एमओसी ने इसके अलावा लक्ष्य ओलंपिक पोडियम कार्यक्रम (टॉप्स) के विकास ग्रुप में शामिल ग्रीको रोमन पहलवान आशु (67 किग्रा), सूरज (55 किग्रा) और रोनित शर्मा (48 किग्रा) के कजाकिस्तान के अल्माटी में अंतरराष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में अभ्यास करने के प्रस्ताव को भी मंजूरी दी। सरकार इन तीनों पहलवान, उनके कोच, फिजियोथैरेपिस्ट और सहयोगी के सभी खर्च उठाएगी। निशानेबाज भवनेश मेंदीरत्ता के विदेशी कोच डेनियल डि स्पिग्नो के साथ एक सप्ताह के प्रशिक्षण शिविर के लिए वित्तीय सहायता के प्रस्ताव को भी मंजूरी दे दी गई है। एमओसी ने निशानेबाज रमिता को निशानेबाजी की किट खरीदने और तीरंदाज यशदीप भोगे को तीरंदाजी उपकरण खरीदने के लिए वित्तीय सहायता के प्रस्तावों को भी मंजूरी दी। इसके अलावा पैरा एथलीट प्रणव सूरमा के खेल उपकरण खरीदने के लिए वित्तीय सहायता, इटली में डब्ल्यूटीटी फीडर बायला में भाग लेने के लिए टेबल टेनिस खिलाड़ी मनिका बत्रा के लिए वित्तीय सहायता और बैडमिंटन खिलाड़ियों किदांबी श्रीकांत और एचएस प्रणय के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं के दौरान सहयोगी स्टाफ रखने के लिए वित्तीय सहायता को भी मंजूरी दी गई।

नीलामी के दौरान 5 खिलाड़ियों पर ध्यान देगी चेन्नई सुपर किंग्स

नई दिल्ली (एजेंसी)। आगामी 19 दिसंबर को आईपीएल 2024 की नीलामी आ रही है। ऐसे में आईपीएल की बड़ी टीमें मुंबई इंडियंस, आरसीबी और चेन्नई सुपर किंग्स पर सबकी नजरें टिक गई हैं। चेन्नई सुपर किंग्स पांच खिलाडियों पर दांव लगा सकती है। ऐसे में चेन्नई के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी का नजरिया देखने लायक होगा। सूत्रों की मानें तो चेन्नई सुपर किंग्स इन पांच सितारा खिलाड़ियों के लिए जा सकता है। इनमें पहला नाम मनीष पांडे का है। अंबाती रायुडू चेन्नई सुपर किंग्स से विदाई ले चुके हैं। ऐसे में उनकी जगह मनीष पांडे आ सकती है। अपनी सधी हुई बल्लेबाजी और एक पारी को संवारने की क्षमता के लिए जाने जाने वाले पांडे मध्य क्रम में फिट बैठ सकते हैं। दूसरा नाम अल्जारी जोसेफ का आता है। जोसेफ अपनी घातक गति और बल्लेबाजी क्रम को ध्वस्त करने की क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं। वह चेन्नई के गेंदबाजी आक्रमण में गति जोड़ देंगे। तीसरा नाम जोश हेज़लवुड का आता है। रॉयल चैलेंजर्स बैंगलोर से उनके जाने के बाद हेज़लवुड की पीली रैंक में वापसी सीएसके की पेस बैटरी में नई ताकत ला सकती है। शुरुआती सफलताओं लेने और लेंथ पर पक्के हेज़लवुड का अंतरराष्ट्रीय अनुभव हमेशा टीम के काम आता है। चौथा नाम शाहरुख खान का आता है। चेन्नई सुपर किंग्स की नजर तमिलनाडु के विस्फोटक बल्लेबाज शाहरुख खान पर भी होगी। अपने पावर-पैक्ड और इनोवेटिव स्ट्रोक्स के लिए मशहूर शाहरुख निडर फिनिशर हैं। वह इससे पहले पंजाब किंग्स के साथ थे। लेकिन अगर वह चेन्नई में आते हैं तो मध्यक्रम में शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं।

भारत के लाड़ले गावस्कर का वहां रिकॉर्ड जो 40 साल बाद भी कायम

नई दिल्ली। किसी भी बल्लेबाज के लिए सबसे खूबसूरत पल शतक बनाना और टीम को जीत दिलाना होता है। शतक इसकी तस्दीक करता है कि खिलाड़ी में ना सिर्फ टैलेंट है, बल्कि धैर्य भी है, जो क्रिकेट, खासकर टेस्ट मैच के लिए जरूरी है। अगर कोई बल्लेबाज दोहरा शतक बनाए, तब कहने ही क्या। दुनिया में कुछ चुनिंदा खिलाड़ी ही हैं जिन्होंने इंटरनेशनल क्रिकेट में दोहरे शतक लगाए हैं। और ऐसा क्रिकेटर दुनिया में एक ही है, जिसने टेस्ट मैच की चारों पारियों में दोहरे शतक लगाए हैं। वह क्रिकेटर कोई और नहीं, भारत के लाडले सुनील गावस्कर हैं। गावस्कर का जैसे ही जिक्र आता है, वैसे ही दो रिकॉर्ड याद आ जाते हैं। टेस्ट क्रिकेट में सबसे पहले 10 हजार रन बनाने और सबसे पहले 34 शतक लगाने के रिकॉर्ड उनके नाम पर है। गावस्कर ये रिकॉर्ड बनाने वाले दुनिया के पहले क्रिकेटर थे। हालांकि, ये रिकॉर्ड अब टूट चुके हैं। लेकिन उनका एक रिकॉर्ड ऐसा भी है, जो सालों के बाद भी कायम है। यह रिकॉर्ड है टेस्ट क्रिकेट की चारों पारियों में दोहरे शतक बनाने का, जिस तक कोई भी क्रिकेटर नहीं पहुंच पाया है। गावस्कर ने पहला दोहरा शतक 1971 में वेस्टइंडीज दौरे पर लगाया था। उन्होंने पोर्ट ऑफ स्पेन टेस्ट मैच की तीसरी पारी में वेस्टइंडीज के खिलाफ 220 रन की पारी खेली थी। गावस्कर ने इस मैच की पहली पारी में भी 124 रन बनाए थे। भारत वेस्टइंडीज का यह मुकाबला ड्रॉ खत्म हुआ था। गावस्कर ने करियर का दूसरा दोहरा शतक 1978 में वेस्टइंडीज के ही खिलाफ लगाया। लेकिन इस बार मैदान वेस्टइंडीज का नहीं, बल्कि मुंबई का वानखेड़े स्टेडियम था। गावस्कर ने इस बार मैच की पहली पारी में ही 205 रन बनाए। हालांकि, इस बार भी भारतीय टीम सनी के दोहरे शतक का फायदा नहीं उठा पाई और मुकाबला ड्रॉ रहा। गावस्कर का अगला दोहरा शतक 1979 में आया। यह भारत और इंग्लैंड का मुकाबला था। गावस्कर ने ओवल टेस्ट की चौथी पारी में 221 रन बनाए।

जूनियर हॉकी विश्व कप: स्पेन के खिलाफ कांस्य पदक मैच में भारत को दिखाना होगा दमखम

कुआलालंपुर (एजेंसी)। अब तक मौकों का फायदा उठाने में नाकाम रही भारतीय टीम को अगर जूनियर पुरुष हॉकी विश्व कप के शनिवार को होने वाले कांस्य पदक के मैच में मजबूत स्पेन को हराना है तो उसे जल्द से जल्द अपने खेल में सुधार करना होगा। भारत ने गुरुवार को जर्मनी के खिलाफ सेमीफाइनल में 12 पेनल्टी कॉर्नर गंवाए जिससे इस मैच में उसे 1-4 से हार का सामना करना पड़ा।

इस पराजय से भारतीय टीम का मनोबल गिरा होगा, लेकिन अगर उसे पोडियम (शीर्ष तीन में शामिल) पर पहुंचना है तो स्पेन के खिलाफ अवसरों को भुनाना होगा। पूल चरण के मैच में स्पेन ने भारत को 4-1 से हराया था। स्पेन की टीम भी दूसरे सेमीफाइनल में फ्रांस के हाथों 1-3 से हार के कारण आहत होगी लेकिन वह कांस्य पदक जीतने के लिए किसी तरह की कसर नहीं छोड़ेगी।

भारतीय टीम भी इस प्रतियोगिता में चौथी बार पोडियम पर पहुंचने की कोशिश करेगी। उसने इस टूर्नामेंट में दो बार (होबार्ट में 2001 और लखनऊ में 2016) स्वर्ण पदक और 1997 में इंग्लैंड के मिल्टन केंस में रजत पदक जीता था। लेकिन उत्तम सिंह की अगुवाई वाली टीम को अगर इस सूची में शामिल होना है तो उसे अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना होगा। भारत के लिए यह प्रतियोगिता मिश्रित सफलता वाली रही है। उसने क्वार्टर फाइनल में विश्व की नंबर चार टीम नीदरलैंड को 4-3 से हराया था लेकिन छह बार के चैंपियन जर्मनी के खिलाफ उसके खिलाड़ी यह लय बरकरार नहीं रख पाए।

भारतीय कप्तान उत्तम ने स्वीकार किया कि उन्होंने कई मौके गंवाए लेकिन साथ ही कहा कि उनके पास अब भी पोडियम पर पहुंचने का मौका है और वह इसके लिए अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। उत्तम ने कहा, 'हमें काफी मौके मिले लेकिन हम उनका फायदा नहीं उठा पाए। हमने पेनल्टी कार्नर को गोल में बदलने की कोशिश की लेकिन ऐसा करने में नाकाम रहे। हमें गेंद पर नियंत्रण बनाए रखने की जरूरत है।' उन्होंने कहा, 'हम अभी टूर्नामेंट से बाहर नहीं हुए हैं और हमें कांस्य पदक का मैच खेलना है। जो कुछ भी हुआ उसे हम नहीं बदल सकते हैं। हमारा पूरा ध्यान अब अगले मैच पर है।' जहां तक स्पेन की बात है तो उसकी टीम अभी तक इस टूर्नामेंट के फाइनल में जगह नहीं बना पाई है। उसका सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2005 में रहा था जब उसकी टीम ने कांस्य पदक जीता था। भारत और स्पेन ने पुरुष जूनियर विश्व कप में अभी तक एक दूसरे के खिलाफ आठ मैच खेले हैं। इनमें से स्पेन ने पांच मैच में जीत दर्ज

की है। इस बीच 2021 में भुवनेश्वर में उप विजेता रही जर्मनी की टीम फाइनल में फ्रांस का सामना करेगी। फ्रांस ने पिछली बार कांस्य पदक जीता था।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

फायदे की फसल बना ग्वारपाठा

ग्वारपाठा या घीग्वार जो मूल रूप से जंगलों में अपने आप उगता पाया जाता है, अब व्यवस्थित रूप से खेतों में उगाया जाने लगा है। इसका उपयोग भारतीय आयुर्वेद एवं यूनानी शफाओं में पाचन संस्थान विशेष रूप से लीवर या जिगर संबंधी कमजोरी और व्याधियों को ठीक करने के अलावा चर्मरोगों व जलने एवं झुलसने के कारण त्वचा की खराबी को दूर करने तथा सौंदर्य प्रसाधनों में भी उपयोगी माना गया है। इसलिए अब लोगों का ध्यान इसकी व्यावसायिक खेती की ओर आकृष्ट हो रहा है।

बदलते परिवेश में जड़ीबूटियों पर आधारित दवाओं की मांग बढ़ी है जिसमें कई तरह की दवाएं व चेहरे पर लगाने वाली कई तरह की क्रीमें बाजार में आई हैं। आज के युग में कॉस्मेटिक हो या हर्बल से संबंधित दवाईयां लगभग सभी में ग्वारपाठा इस्तेमाल हो रहा है जिससे इसकी मांग लगातार बढ़ रही है। इसकी फसल के लिए हल्की से मध्यम किस्म की दुमटए बलुई दुमटए कछारी एलूवियल मिट्टी वाले खेत ही चुनें। भारी और चिकनी मिट्टी में बरसात में पानी भरा रहने पर फसल खराब हो सकती है। खेत बखरने के बाद पाटा अथवा पठार चलाकर खेत को समतल करें। इसी समय 200 से 250 क्विंटल गोबर की अच्छी तरह पची और पकी हुई फरमेंटेड खाद या शहरी कम्पोस्ट खाद खेत में जगह-जगह ढेरियाँ बनाकर समान रूप से बिखेर दें। इसके बाद दाँतेदार बखर 'स्पाइक टुथ हेरो' या दतारी चलाकर उसे मिट्टी के साथ अच्छी तरह मिला दें। यदि उपलब्ध हो तो एक बार रोढावेटर चलाएँ।

बुवाई के लिए डेढ़ से दो फुट की दूरी पर नौ से बारह इंच ऊँची मेढ़ व नालियाँ बनाएँ। शिशु पौधों को एक फुट की दूरी पर लगाया जाता है। लगभग 22 हजार पौधे एक एकड़ के लिए चाहिए। भारी व उपजाऊ मिट्टी में इन्हें कतार में दो फुट व पौधों के बीच डेढ़ फुट की दूरी पर लगाया जाना चाहिए। इस अंतर पर प्रति एकड़ लगभग 15 हजार पौधों की जरूरत होती है।

बोवनी के तत्काल बाद एक हल्की सिंचाई कर 20.25 दिन बाद 25 किलोग्राम यूरियाए 50 किग्रा सुपर फास्फेट व 30 किग्रा म्यूरेट ऑफ पोटाश मिलाकर नालियों में डालकर गुड़ाई कर हल्की सिंचाई कर दें। खरपतवारों को निकालने व पौधों के जड़ क्षेत्र में वायु का संचार के लिए आवश्यकतानुसार निंदाई व गुड़ाई करते रहें। जड़ें खुली दिखें तो उन पर मिट्टी चढ़ाते रहें।

ग्वारपाठा के पौधों को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती हैए परंतु खेत में हल्की नमी बनी रहे व दरारें नहीं पड़ना चाहिए। इससे पत्तों का लुबाब सूख कर सिकुड़ जाते हैं। बरसात के मौसम में संभालना ज्यादा जरूरी होता है। खेत में पानी भर जाए तो निकालने का तत्काल प्रबंध करें। लगातार पानी भरा रहने पर इनके तने, पत्ते और जड़ के मिलान स्थल पर काला चिकना पदार्थ जमकर गलना शुरू हो जाता है।

खुश्क मौसम में इनका विकास अच्छा होता है। पौधे को पूर्ण विकसित होने में आठ से बारह महीने लग जाते हैं। इसके पौधे की पत्तियों के पूरी तरह बढ़ जाने पर तेजधार वाले चाकू से काट लिया जाता है। इसी पौधे से पुनः नई पत्तियाँ आने लगती हैं। जब नई पत्तियाँ आने लगेए उस समय 40 किग्रा नत्रजनए 30 किलो स्फुर व 20 किग्रा पोटाश प्रति एकड़ से हिसाब से नालियों की मिट्टी के साथ मिलाकर सिंचाई कर दें।

एक बार लगाने पर तीन से पाँच साल तक उपज ली जा सकती है। पत्तियों को काटने के बाद दोनों तरफ से काँटे निकाल दें। इसके बाद पत्तों को खड़ा चीरकर बीच का लसीला गूदा अलग बर्तन में एकत्र कर लें। इसे धूप में सूखाकर या बिजली से चलने वाले यांत्रिक सुखावकों में रखकर सुखाया जाता है। यदि क्रीमए पेस्ट या आयुर्वेदिक द्रव या तरल उत्पाद बनाना हो तो इस लुबाब को ऐसे ही उपयोग में लाया जाता है। उस उत्पाद के अनुसार उसका प्रसंस्करण कर लिया जाता है।

यदि ग्वारपाठे के एक स्वस्थ पौधे से 400 ग्राम मिली गूदा भी निकले तो एक एकड़ के 20000 पौधों से 8000 किग्रा गूदा प्राप्त होगा। यदि इसका कम से कम बिक्री भाव 100 रु. प्रति किग्रा भी लगाया जाए तो आठ लाख रुपए होता है। ये सब अनुमानित आकलन है।

ग्वारपाठा कि उन्नत आर्गनिक जैविक खेती औषधीय पौधे

जलवायु

ग्वारपाठा उत्पादन के लिए उष्ण जलवायु कि आवश्यकता होती है ।

भूमि

यद्यपि ग्वारपाठा खेती असिंचित और सिंचित दोनों प्रकार कि मृदाओं में कि जाती है परन्तु इसकी सदैव असिंचित भूमि पर ही खेती कि जानी चाहिए इसकी खेती के लिए उचित जल निकास वाली भूमि होना चाहिए ।

भूमि कि तैयारी

इसकी जड़े बहुत गहरी नहीं जाती है अतरूइसके लिए बिशेष तैयारी कि आवश्यकता नहीं होती है देसी हल से या कल्टीवेटर से दो बार जुताई करने से काम चल जाता है प्रत्येक जुताई के उपरांत पाटा अवश्य लगाये ।

प्रजातियाँ

ग्वारपाठा कि कई प्रजातियाँ है जो मुख्यतरूअफ्रीका एअरब और भारत में पाई जाती है इसके प्राप्ति स्थल और देश के अनुसार इसकी कई प्रजातियाँ पहचानी गयी है जिनका संक्षिप्त उल्लेख आगे किया गया है।

एलोबेरा

यह ग्वारपाठा कि प्रमुख प्रजाति है जो सब जगह बिशेष रूप से मध्य प्रदेश एउत्तरप्रदेशएराजस्थान आदि प्रदेशो में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है ।

एलो इंडिका

यह ग्वारपाठा कि छोटी प्रजाति है जो भारत में चेन्नई से रामेश्वरम तक पाई जाती है इसे छोटा ग्वारपाठा के नाम से भी जाना जाता है इसके पत्ते 15.17 .5 से.मी.6.7 इंच से 30 से.मी.1 फुट तक लम्बे होते है जिनके किनारे सामान्यतः दन्तुर होते है इसका उपयोग विशेषतः दाह बिबंध और ज्वर रोगों के लिए किया जाता है ।

एलो फिरोक्स

यह एक अफ्रीका कि प्रजाति है जो भारत में नहीं पाई जाती है यह सबसे ऊँची प्रजाति है इसके पौधे 270.300 से.मी.9.10 फिट तक ऊँचे बढ़ते है इसमे सफेद रंग के फुल खिलते है ।

एलो एबिसनिका

यह प्रजाति काठियावाड़ व खम्बात कि खाड़ियों में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है इसके पत्ते अधिक चौड़े एवं पुष्प दंड अधिक लम्बे होते है जाफराबंदी एलुआ इस प्रजाति से प्राप्त किया जाता है ।

एलो रुपेसेंसा

यह प्रजाति लाल ग्वार पाठा के नाम से भी पहचानी जाती है यह बंगाल और सीमांत प्रदेश में पाई जाती है इस पर नारंगी और लाल रंग के पुष्प खिलते है इसके पत्तो का निचला भाग बैगनी रंग का होता है इसके गुदे को स्प्रिट में गलाकर लेप करने से बाल काले किये जाते है यह प्रजाति पाचक, किंचित उष्ण, उदर शूल मंदागिनी, अर्श बवाशिर आदि में बिशेष उपयोगी होते है पेट के कीड़े को मारने के लिए भी श्रेष्ठ है ।

जाफरावादी ग्वार पाठा

यह प्रजाति सौराष्ट्र के समुंद्र तट पर मिलती है इसके पत्ते तलवार नुमा स्वेत बिंदु युक्त होते है । उपरोक्त सभी प्रजातियों में अधिकतर एलोवेरा प्रजाति कि खेती कि जाती है ।

प्रवर्धन

ग्वार पाठा का प्रवर्धन धन कन्दो द्वारा किया जाता है इसके छोटे पौधे कि रोपाई जुलाई, अगस्त माह में कि जाती है वैसे इसे अक्तूबर तक रोपा जा सकता है धनकंदो के अलावा पुराने पौधे कि जड़ो के पास से ही कुछ छोटे पौधे निकलने लगते है वर्षा ऋतु में इन्ही पौधों को जड़ सहित निकाल कर बड़े खेतो में लगा दिया जाता है और इनका बिज रोपण सामग्री कहलाती है।

पौधों कि संख्या

ग्वार पाठा के एक एकड़ में कितने पौधे लगाये जाय यह एक अत्यंत महत्व पूर्ण प्रश्न है एक मीटर में इसकी दो पत्तियां लगाई जाती है और फिर एक मीटर खाली छोड़कर पुनरू एक मीटर में पत्तिंया लगेगी इस प्रकार ग्वार पाठा एक एकड़ में 14000 से 16000 तक पौधे लगगे प्रत्येक खंड के बाद एक मीटर जगह खरपतवार निकलने और पत्तियों कि कटाई के लिए रखते है ।

सिंचाई

यह वर्षा पर आधारित फसल है वर्षा न होने पर खेत कि हलकी सिंचाई करनी चाहिए।

खर पतवार

ग्वार पाठे के साथ अनेक खर पतवार पनपते है जो ग्वार पाठे के बिकास एवं बढ़वार पर प्रतिकूल प्रभाव डालते है अतरूइनकी रोकथाम के लिए आवश्यकता नुसार निराई-गुड़ाई करते रहना चाहिए ।

कटाई

ग्वार पाठा कि फसल 12 महीनो में कटाई के लिए तैयार कि जाती है अतरू हर 3 माह में प्रत्येक पौधे कि 3.4 पत्तियां को छोड़कर शेष सभी पत्तियों को काट लेना चाहिए पत्तियों कि कटाई तेज धार वाली दरांती से करनी चाहिए अन्यथा पौधे के उखड़ने का भय रहता है ।

उपज

ग्वार पाठा कि प्रति हेक्टेयर 20000 किलोग्राम तजा पत्तियां मिल जाती है जिनका बर्तमान बाजार भाव 2रुपये से 5 रुपये प्रति किलो ग्राम होता है इन हरी पत्तियों को आयूरबैदिक दवाइयां बनाने वाली कंपनियों और प्रसाधन सामग्री निर्माताओ को बेचा जा सकता है । मुसब्बर अथवा अलुवा सार बनाकर भी बेचा जा सकता है ।

ग्वार पाठा कि खेती के विशेष लाभ

ग्वारपाठा को बेकार पड़ी भूमि पर उगाया जा सकता है ऐसा करने से भूमि का सदुपयोग हो जाता है और किसान को अतिरिक्त आय भी प्राप्त हो जाता है इसकी खेती के लिए खाद एकीटनाशक फफूंदीनाशक आदि कि कोई आवश्यकता नहीं होती है ग्वार पाठा बहु वर्षीय पौधा है अतः एक बार लगाने पर कई वर्षो तक उपज मिलती रहती है इस पर एलुवा बनाने व सुखा पावडर बनाने वाले उद्योगों कि स्थापना कि जा सकती है ग्वार पाठा कि जेल और सूखे पावडर कि बिश्व बाजार में भारी मांग होने के कारण इससे विदेशी मुद्रा अर्जित कि जा सकती है ।

कश्मीर पाकिस्तान की गले की नस, सुप्रीम कोर्ट का फैसला राजनीति से प्रेरित : काकड़

कराची । पाकिस्तान के कार्यवाहक प्रधानमंत्री अनवारुल हक काकड़ ने आरोप लगाया कि संविधान के अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को निरस्त करने को बरकरार रखने वाला भारत के सुप्रीम कोर्ट का फैसला राजनीति से प्रेरित है। पाकिस्तान के कार्यवाहक पीएम काकड़ ने कश्मीर के लोगों के प्रति पाकिस्तान के नैतिक, राजनीतिक और राजनयिक समर्थन की पुष्टि भी की। दरअसल सुप्रीम कोर्ट ने पूर्ववर्ती जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा देने वाले संविधान के अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को निरस्त करने के केंद्र के फैसले को सोमवार को सर्वसम्मति से बरकरार रखा और केंद्र शासित प्रदेश (जम्मू कश्मीर) का राज्य का दर्जा ''जल्द से जल्द'' बहाल करने एवं अगले साल 30 सितंबर तक विधानसभा चुनाव कराने का निर्देश भी दिया। काकड़ ने पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) की विधानसभा के विशेष सत्र को संबोधित करते हुए कहा, ''कश्मीर पाकिस्तान की गले की नस है। कश्मीर के बिना पाकिस्तान शब्द अधूरा है। पाकिस्तान और कश्मीर के लोग अद्वितीय रूप से आत्मीयता से बंधे हुए हैं।'' पाकिस्तान के प्रधानमंत्री ने कहा कि राजनीतिक मतभेदों के बावजूद पूरा पाकिस्तानी नेतृत्व कश्मीरियों के आत्मनिर्णय के अधिकार के समर्थन में एकजुट है। उन्होंने कहा, जम्मू-कश्मीर पाकिस्तान की विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण पहलू बना हुआ है।

पूर्व प्रधानमंत्री इमरान को दो दिन की हिरासत में भेजा

कराची । पाकिस्तान की अदालत ने तोशाखाना भ्रष्टाचार मामले में जेल में बंद पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान को दो दिन के लिए राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) की हिरासत में भेज दिया। इस मामले में, पूर्व पीएम खान (71) पर तोशाखाना नियमों के उल्लंघन का आरोप है। पाकिस्तान के शीर्ष नेताओं को विदेश यात्रा के दौरान मिलने वाले उपहारों को तोशाखाना में रखा जाता है। खबर के अनुसार, इस्लामाबाद में जवाबदेही अदालत के न्यायाधीश मुहम्मद बशीर ने तोशाखाना मामले में पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ के पूर्व प्रमुख खान को दो दिन के लिए एनएबी की हिरासत में भेज दिया।

जेक सुलिवन रामल्ला की यात्रा पर

वाशिंगटन । अमेरिका में व्हाइट हाउस के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार जेक सुलिवन शुक्रवार को रामल्ला की यात्रा के दौरान फिलिस्तीनी प्राधिकरण की क्षमता में सुधार की आवश्यकता और गाजा पट्टी के भविष्य पर चर्चा करने वाले हैं। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी ने इसकी जानकारी दी। अधिकारी ने कहा, हम फिलीस्तीनी प्राधिकरण की क्षमता के बारे में बात करने वाले हैं, हम मानते हैं कि इस सुधारने, पुनर्जीवित करने की जरूरत है, और मुझे लगता है कि वे खुद आपको यह बताएंगे। उन्होंने कहा मुझे लगता है कि हम राष्ट्रपति महमूद अब्बास और उनकी वरिष्ठ टीम के साथ मुख्य रूप से वेस्ट बैंक में स्थिरता के बारे में और साथ ही गाजा में आगे क्या होगा इसके बारे में भी चर्चा करेंगे।

बोस्मा नीदरलैंड की प्रतिनिधि सभा के नये अध्यक्ष चुने गए

हेग । नीदरलैंड में फॉर फ्रीडम के मार्टिन बोस्मा को संसद के निचले सदन प्रतिनिधि सभा के नए अध्यक्ष चुने गए। रिपोर्ट के अनुसार, श्री बोस्मा को 75 वोट मिले, जबकि उनके प्रतिद्वंद्वी, ग्रोएनलिंक्स ग्रीन राजनीतिक दल के टॉम वैन डेर ली को 66 वोट मिले। इस बार अध्यक्ष चुनने के लिए दो राउंड की वोटिंग हुई। दूसरे राउंड में 146 वोट गिने गए। विजेता को 74 से अधिक वोटों की आवश्यकता थी। नई डच प्रतिनिधि सभा ने छह दिसंबर को शपथ ली थी।

ट्रंप की चीनी के प्रति नीतियों ने अमेरिका के लिए दिक्कतें पेश की : येलेन

वाशिंगटन । अमेरिकी वित्त मंत्री जेनेट येलेन ने कहा कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प की चीन के प्रति नीतियों ने अमेरिका को वैश्विक अर्थव्यवस्था में ज्यादा असुरक्षित और ज्यादा अलग-थलग कर दिया है। ट्रम्प, रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से राष्ट्रपति पद के नामांकन के लिए सबसे आगे चल रहे हैं। एक कार्यक्रम में येलेन ने कहा कि ट्रम्प प्रशासन बुनियादी ढांचे और उन्नत प्रौद्योगिकी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में घरेलू निवेश करने में विफल रहा, जबकि हमारे साझेदारों और सहयोगियों के साथ संबंधों की भी उपेक्षा की, जो दशकों से बने और मजबूत हुए थे। येलेन की टिप्पणी उस समय आई है, जब अमेरिका एशियाई महाशक्ति के साथ अपने संबंधों को सुधारने का प्रयास कर रहा है। पिछले महीने नवंबर में सैन फ्रांसिस्को में अमेरिकी राष्ट्रपति बाइडन और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच बैठक भी हुई थी। उन्होंने कहा, हमारे आर्थिक संबंधों को जिम्मेदारी से प्रबंधित करने के लिए उद्देश्यपूर्ण और सावधानीपूर्वक आगे बढ़ना चीन पर बाइडन प्रशासन का दृष्टिकोण है।

मां की कार के पीछे पेशाब करने पर कोर्ट ने सुनाई मासूम को सजा

मिसीसिपी । मिसीसिपी में 'टाटे काउंटी यूथ कोर्ट' के न्यायाधीश रस्टी हैरलॉ ने मानवाधिकार मामले में 10 साल के अश्वेत बच्चे को कार के पीछे पेशाब करने के अपराध में कैद की सजा सुनाई है। अदालत ने बच्चे को तीन महीने तक हर माह एक बार प्रोबेशन अधिकारी के समक्ष पेश होने और दिवंगत बास्केटबॉल खिलाड़ी कोबी ब्रायंट पर दो पृष्ठों की एक रिपोर्ट लिखने की सजा सुनायी है। बच्चे के वकील कार्लोस मूरे ने कहा कि उन्हें नहीं लगता कि किसी श्वेत बच्चे को ऐसी ही परिस्थितियों में गिरफ्तार किया जाता। बच्चे की मां ने बताया कि उनके बेटे ने उस वक्त उनकी गाड़ी के पीछे पेशाब किया था जब वह 10 अगस्त को मिसिसिपी के सेनाटोबिया में एक वकील के कार्यालय में गयी थी। शहर में पुलिस अधिकारी ने बच्चे को पेशाब करते हुए देखा और उसे गिरफ्तार कर लिया। अधिकारियों ने उसे कार में बिठाया और पुलिस थाने ले गए। 'सूत्रों के अनुसार, सेनाटोबिया पुलिस प्रमुख रिचर्ड चैंडलर ने कहा कि बच्चे को हथकड़ी नहीं लगायी गयी लेकिन उसकी मां ने कहा कि उसे जेल की कोठरी में रखा गया था। बच्चे के वकील कार्लोस मूरे ने कहा, कि मुझे नहीं लगता कि अमेरिका में एक भी ऐसा पुरुष है जिसने सार्वजनिक स्थान पर छिपकर पेशाब न किया हो। उन्होंने कहा, ''मैंने सोचा कि कोई भी समझदार न्यायाधीश पूरी तरह इस आरोप को नकार देगा। यह बस मूर्खता है। आपराधिक न्याय प्रणाली में घोर खामियां हैं। मूरे ने बताया कि अभियोजन ने धमकी दी थी कि अगर लड़के का परिवार इस मामले में मुकदमा चलाने का फैसला लेता है तो और गंभीर आरोप लगाए जाएंगे जिसके बाद दोनों पक्षों ने एक समझौता कर लिया।

पत्नी व बच्चों की हत्या के बाद पति आत्महत्या करना चाहता था

इस्माईलाबाद । पत्नी की हत्या करने के बाद बेटे और बेटी की हत्या करने के बाद वह आत्महत्या करना चाहता था। फंदा लगाया तो परिजनों ने फंदे से उतार कर बचा लिया। पिछले दिनों गांव शांतिनगर में हुई इस घटना के आरोपी राकेश कुमार ने पुलिस के सामने अपना जुर्म कबुल कर उस रात की घटना बयां की है। गुरूवार सुबह पुलिस ने आरोपी को होश में आने बाद गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने उसे न्यायालय में पेश किया जहां से उसे दो दिन के रिमांड पर भेज दिया है। झांसा थाना प्रभारी इंस्पेक्टर प्रदीप कुमार ने बताया कि डॉक्टरों ने जैसे ही राकेश के फिट होने की सूचना उन्हें दी। पुलिस ने उसको गिरफ्तार कर पूछताछ की। पूछताछ में राकेश ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है। आरोपी ने पुलिस को बताया कि वह अमरीका जाना चाहता था। विदेश जाने के लिये उसने नौकरी छोड़ दी थी, लेकिन पैसों का प्रबंध नहीं हो पा रहा था।

पेरिस, फ्रांस में जार्डिन डीएक्लीमेटेशन में ड्रेगन और लालटेन महोत्सव में लालटेन के साथ तस्वीरें खिंचवाती एक महिला। यह महोत्सव 15 दिसंबर, 2023 से 25 फरवरी, 2024 तक जनता के लिए खुला रहेगा।

भ्रष्टाचार के खिलाफ चल रहे अभियान में फंसा बैंक प्रबंधक, मिली उम्र कैद की सजा

शंघाई। इस वक्त चीन में भ्रष्टाचार के खिलाफ बड़े स्तर पर अभियान चलाया जा रहा है। जिसमें कई लोगों पर शिकंजा कसा गया है। बैंक में 27 सौ करोड़ का घोटाला करने वाले एक प्रबंधक को अपने दो साथियों के साथ उम्र कैद की सजा हुई है। भ्रष्टाचार करने वाले एक पूर्व बैंक मैनेजर को उम्रकैद की सजा सुनाई गई है। 20 साल पहले उसने अरबों रुपए का घोटाला किया था। कोर्ट में महीनों पहले यह केस सामने आया। मामले में पूर्व मैनेजर के साथ दो पूर्व कर्मचारी भी शामिल थे। आरोप था कि लोन क्लियर करने के लिए पूर्व मैनेजर ने दो कर्मियों की मदद ली और अवैध तरीके से 2700 करोड़ रुपए के लोन पास कराए। कई लोन एग्रीमेंट और दस्तावेजों की जांच के बाद पता चला कि पूर्व मैनेजर ने भ्रष्टाचार का जाल बुन लिया था। जू गुओजुन ने 1993 से 2001 तक दक्षिणी चीन में बैंक ऑफ चाइना ब्रांच मैनेजर के रूप में काम किया था। उन्हें अब चीन की अदालत ने 2700 करोड़ रुपए के भ्रष्टाचार में दोषी पाया। उनका मामला राष्ट्रपति शी जिनपिंग के भ्रष्टाचार विरोधी अभियान का हिस्सा है, जो देश के 60 ट्रिलियन डॉलर के वित्तीय उद्योग पर फोकस करता है। आर्थिक हालात बिगड़ने के साथ ही वित्तीय अनियमितताओं को दूर करने के लिए इस अभियान में तेजी लाई गई है। स्थानीय मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, जू के दो सहयोगियों को पहले 12 और 13 साल की जेल की सजा सुनाई गई थी, और चोरी की गई 2 बिलियन युआन यानी 2700 करोड़ रुपए से अधिक की धनराशि बरामद कर ली गई थी। 2001 में अमेरिका भागने के बावजूद, जू को दो साल पहले जबरन वापस चीन भेज दिया गया था और उसने सजा के खिलाफ अपील नहीं करने का फैसला किया है। इसके अलावा, उनसे जीवन भर के लिए उनके राजनीतिक अधिकार छीन लिए गए हैं और उनकी सारी संपत्ति भी जब्त कर ली गई है। भ्रष्टाचार का मामला शी जिनपिंग के बड़े अभियान का हिस्सा है, जिसमें चीनी राज्य के स्वामित्व वाले बैंकों के अन्य हाई-प्रोफाइल वित्तीय अधिकारियों को जुर्माना, जेल या चल रही जांच जैसे दंड का सामना करना पड़ रहा है।

चीन को जवाब देने की तैयारी, इटली-जापान के साथ स्टील्थ फाइटर जेट बनाएगा ब्रिटेन

लंदन (एजेंसी)। ब्रिटेन, इटली और जापान ने मिलकर एक नया स्टील्थ फाइटर जेट विकसित किया है। यह रूस, चीन और उत्तर कोरिया को ध्यान में रखते हुए - विमान का उत्पादन करने के लिए देशों की सहमति के एक साल बाद आया है। ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने हस्ताक्षर के बाद कहा कि यह लड़ाकू हवाई विमान, 2035 तक आसमान में ले जाने के लिए, अगली पीढ़ी की प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने और विश्व स्तर पर सेवा में दुनिया के सबसे उन्नत, अंतर-संचालनीय, अनुकूलनीय और कनेक्टेड लड़ाकू जेट में से एक बनने का लक्ष्य रखता है। बयान में कहा गया है कि सुपरसोनिक स्टील्थ जेट में एक शक्तिशाली रडार होगा जो मौजूदा सिस्टम की तुलना में 10,000 गुना अधिक डेटा प्रदान कर सकता है, जो युद्ध जीतने वाला लाभ देता है।

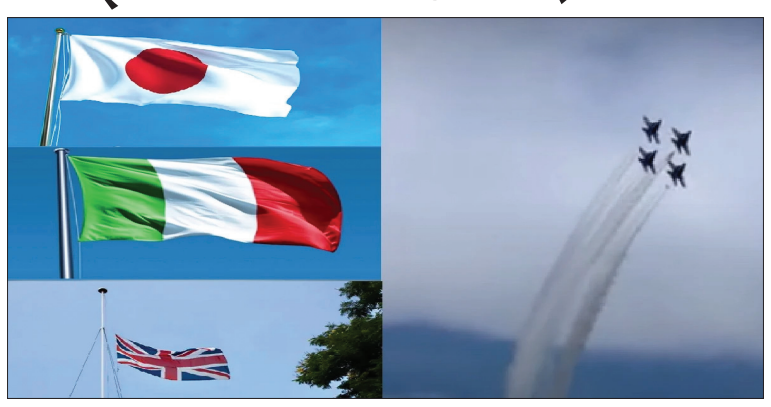

क्रॉपट के बारे में क्या जानते हैं

द नेशनल के मुताबिक, इस विमान को यूके में टेम्पेस्ट के नाम से जाना जाता है। प्रस्तावित योजना में जेटों के लिए ऐसे सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर की आवश्यकता है जिन्हें आसानी से अंदर और बाहर बदला जा सके जो कि किए जा रहे मिशन पर निर्भर करता है। साथ ही, यान में कोई भौतिक उपकरण नहीं होगा। प्रस्तावित क्रॉफ्ट यकीनन इतिहास का सबसे उच्च तकनीक वाला लड़ाकू विमान होगा। योजना में शिल्प में हाइपरसोनिक हथियारों की आवश्यकता है जो विरोधियों को लक्षित करने के लिए मैक 5, एआई-नियंत्रित ड्रोन और ऊर्जा हथियार प्रणालियों की गति प्राप्त कर सकें। अल जज़ीरा के अनुसार, यह प्रोग्राम यूके और इटली के फ्यूचर कॉम्बैट एयर सिस्टम प्रोजेक्ट को जापान के एफ-एक्स प्रोग्राम के साथ मिलाता है। इस साझेदारी को ग्लोबल कॉम्बैट एयर प्रोग्राम (जीसीएपी) कहा जाएगा।

क्यों हो रही है ये डील?

जापान तेजी से अपनी सेना का निर्माण कर रहा है। भारत-प्रशांत क्षेत्र में ब्रिटेन की बड़ी उपस्थिति का स्वागत करते हुए चीन की बढ़ती आक्रामकता का मुकाबला करने की अधिक क्षमता की उम्मीद करता है। जापान ने अब तक केवल प्रमुख रक्षा कार्यों के लिए अमेरिकी कंपनियों के साथ सहयोग किया है। जापान के नेटवर्क को यूरोप तक विस्तारित करेगा और इसके सुरक्षा वातावरण को मजबूत करने में योगदान देगा, जबकि संभावित रूप से निर्यात को संभव बनाएगा। रक्षा मंत्री मिनोरू किहारा ने अपने ब्रिटिश और इतालवी समकक्षों, ग्रांट शाप्स और गुइडो क्रोसेट के साथ एक संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में कहा कि उच्च प्रदर्शन वाले लड़ाकू विमान का सह-विकास हवाई श्रेष्ठता हासिल करने और प्रभावी निरोध को सक्षम करने के लिए अपरिहार्य है। ऐसे समय में जब जापान उत्तरोत्तर गंभीर सुरक्षा वातावरण का सामना करना पड़ रहा है। किहारा ने कहा कि आज कोई भी राष्ट्र अपनी रक्षा नहीं कर सकता है, उन्होंने कहा कि एक उन्नत लड़ाकू जेट विकसित करने के लिए प्रौद्योगिकी और धन हासिल करने में बड़े जोखिम शामिल हैं।

यूक्रेन से युद्ध में रूस ने अपनी सेना का करीब 90 प्रतिशत हिस्सा खो दिया

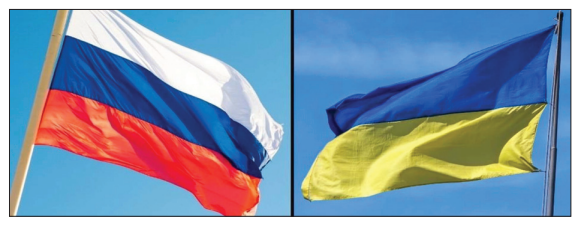

-अमेरिकी खुफिया विभाग की रिपोर्ट में किया दावा

वॉशिंगटन (एजेंसी)। यूक्रेन से जारी युद्ध के कारण रूस ने अपनी सेना का करीब 90 फीसदी हिस्सा खो दिया है। यह दावा अमेरिका के खुफिया विभाग की रिपोर्ट में किया गया है। गौरतलब है कि रूस ने फरवरी 2022 में यूक्रेन पर आक्रमण किया। इस को करीब 22 माह हो गए हैं, लेकिन जंग खत्म होने का नाम नहीं ले रही है। जाहिर सी बात है कि इतने लंबे समय से चल रही जंग में दोनों पक्षों के काफी लोग हताहत हुए हैं। हाल ही में अमेरिकी खुफिया एजेंसी ने अपना आकलन कांग्रेस (संसद) के साथ साझा किया। इससे यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में रूस की सैन्य क्षमताओं पर पड़ने वाले गंभीर प्रभाव की जानकारी मिलती है। एक मीडिया रिपोर्ट के अनुसार रूस की युद्ध-पूर्व सेना का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा मृत्यु या घायल होने के कारण खत्म हो गया है, साथ ही हजारों युद्ध टैंक नष्ट हो गए हैं।

इस मामले में कांग्रेस के एक सूत्र से प्राप्त आकलन से पता चलता है कि फरवरी 2022 में मॉस्को की 360,000 की सेना को यूक्रेन पर आक्रमण के लिए उतारा गया था। लेकिन इतने दिनों में 315,000 रूसी सैन्यकर्मी मारे गए या घायल हुए हैं। बताया जा रहा है कि यह मॉस्को की 360,000 की युद्ध-पूर्व सेना का 87 फीसदी है। इसके अलावा, रूस के टैंक बल को भी करारा झटका लगा है। युद्ध-पूर्व उसके पास 3,500 टैंक थे। लेकिन उसमें से 2,200 टैंक या तो नष्ट हो गए हैं, या गायब हो गए हैं। ये कुल संख्या का लगभग दो तिहाई हैं। हालांकि यह पहले से ही पता था कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन की सेना को यूक्रेन में काफी नुकसान हुआ है।

बता दें कि यह आकलन रूस की सेना के बारे में नई और विस्तृत जानकारी प्रदान करता है। इस मूल्यांकन का जारी होना यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की की वॉशिंगटन यात्रा के लिए अहम है, जहां वह लगातार अमेरिकी सैन्य सहायता की वकालत कर रहे हैं। रिपोर्ट में यह भी आकलन किया गया है कि यूक्रेनी सेना के कारण सैनिकों और टैंकों के नुकसान ने रूस के सैन्य आधुनिकीकरण को 18 साल पीछे धकेल दिया है। हालांकि रूसी दूतावास ने इसका तुरंत जवाब नहीं दिया है।

यूक्रेन को मिल सकती है ईयू की सदस्यता

कीव। यूरोपियन यूनियन की बात है, यूक्रेन को इसकी सदस्यता मिलते-मिलते अब भी बरसों बरस लग जाएंगे। यूक्रेन की आबादी करीब साढ़े चार करोड़ है। भौगोलिक तौर पर अगर देखें तो यूक्रेन यूरोपियन यूनियन के सभी सदस्य देशों से बड़ा है। इस तरह अगर यूक्रेन ईयू से जुड़ता है तो वह यूरोपीय यूनियन का सबसे बड़ा सदस्य देश होगा। यूक्रेन के ईयू में शामिल होने से उसे उसके लिए सदस्य देशों के साथ व्यापार आसान हो जाएगा। साथ ही यूरोप के बाजार में यूक्रेनी सामान, कामगार, सेवा की पहुंच हो पाएगी। लोगों की तनख्वाह और पेंसन में भी भारी इजाफा हो सकता है।

भुखमरी: रोटी नहीं मिली तो गधा काटकर खा गए फिलिस्तीनी

गाजा (एजेंसी)। इजरायल और हमास के बीच चल रही जंग ने आम आदमी को दाने दाने के लिए तरसा दिया है।

इजराइली सेना पूरे गाजा में ऑपरेशन ऑल आउट चला रही है। उत्तर से लेकर दक्षिण तक में बमबारी हो रही है। मिस्र के रास्ते गाजा में मानवीय मदद भेजी जा रही है लेकिन कुछ इलाकों में कनेक्टिविटी नहीं होने से हालात बदतर हैं। फिलिस्तीनी परिवार यहां दाने-दाने को तरस रहे हैं। पीने के पानी तक की किल्लत है। हालात का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मजबूरी में उन्हें गधे का मांस खाना पड़ रहा है।

इजराइल की वजह से हालात इतने बुरे हैं कि बच्चे रोटी की भीख मांग रहे हैं। बींस की एक केन के लिए 50 गुना दाम देना पड़ रहा है। परिवार का पेट भरने के लिए वे गधे काट रहे हैं। हमास को मिटाने के चक्कर में इजराइल ने गाजा में इस कदर तबाही मचाई है कि हजारों घर तबाह हो गए हैं। शर्णार्थी कैंप्स तक पर बम गिराए गए हैं। कमोबेश 19 हजार लोगों की मौत हो गई है, जिनमें अधिक संख्या महिलाओं और बच्चों की है। यूनाइटेड नेशन की मानवीय मामलों पर नजर रखने वाली संस्था ऑफिस ऑफ ह्युमनिटेरियन एड्स के मुताबिक रफाह सीमा के रास्ते बहुत सीमित संख्या में ट्रकों की आवाजाही हो पा रही है। इजराइली अल्टीमेटम के बाद उत्तरी गाजा से कमोबेश 11 लाख लोग दक्षिणी गाजा पहुंचे थे। ऐसे में दक्षिणी हिस्से की आबादी दोगुनी हो गई है। इनमें भी कई हिस्से में लगातार बमबारी हो रही है। इजराइली सेना के हमले की वजह से उत्तरी गाजा के अधिकतर हिस्से में मानवीय मदद भेजी भी नहीं जा रही है।

जानकारी के मुताबिक उत्तरी गाजा में लोगों को पहले के मुकाबले कुछ खरीदने के लिए 50-100 गुना चुकाने पड़ रहे हैं। दुकानों पर ब्रेड की किल्लत है। लोग अपने परिवार को खिलाने के लिए गधे काट रहे हैं। मिस्र के रास्ते जो भी मानवीय मदद ट्रकों में भेजी जा रही है, उसे सबसे पहले इजराइली सेना चेक करती है। इससे स्थिति और खराब हुई और ट्रकों को वापस तक किया जा रहा है।

हिंदू आस्था से नामांकन आसान? विवेक रामास्वामी ने आलोचकों पर साधा निशाना

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। सीनेट में बहुमत के नेता चक शूमर ने दिन के अंत में कहा कि हम वास्तव में कड़ी मेहनत कर रहे हैं। यह आसान नहीं है, लेकिन हम कड़ी मेहनत कर रहे हैं। सांसदों द्वारा छुट्टियों के माध्यम से गतिरोध को अनसुलझा छोड़ने का मतलब होगा कि बिडेन प्रशासन को यूक्रेन के लिए धन की घटती आपूर्ति पर निर्भर रहना होगा। युद्धकालीन सहायता अब तक रूस के आक्रमण के खिलाफ यूक्रेन की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण रही है, लेकिन उत्साहित रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने गुरुवार को युद्ध में अपने लक्ष्यों के प्रति प्रतिबद्धता जताई।

रूस को खदेड़ना बिडेन के प्रमुख विदेश नीति लक्ष्यों में से एक रहा है। लेकिन डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति को कांग्रेस में रिपब्लिकन के कड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है

भारतीय-अमेरिकी विवेक रामास्वामी, जो 2024 के अमेरिकी राष्ट्रपति पद की दौड़ में रिपब्लिकन दावेदार हैं, अपने हिंदू धर्म के बारे में आलोचना करने वालों पर पलटवार करते हुए अपने धर्म के बारे में अपने विचारों को दोगुना कर दिया है। आयोवा में सीएनएन टाउन हॉल के दौरान रामास्वामी ने कहा कि वो सम्मानपूर्वक असहमत हैं जब एक दर्शक सदस्य ने उनसे कुछ मतदाताओं की धारणा को संबोधित करने के लिए कहा कि उनका धर्म वह नहीं है जिस पर अमेरिका के संस्थापक ने देश को आधारित किया था। अब, रिपब्लिकन दावेदार ने एक्स पर एक और पोस्ट के साथ अपनी बात पर जोर दिया है।

उन्होंने बुधवार को माइक्रो-ब्लॉगिंग साइट पर लिखा कि विवेक लोगों को वही बताते हैं जो वे सुनना चाहते हैं' वाली भीड़ के लिए विचार के लिए भोजनः क्या आपको लगता है कि खुले तौर पर अपनी हिंदू आस्था को अपनाकर जीओपी के प्राथमिक मतदाताओं को जीतना मेरे लिए आसान या कठिन है?

खालिस्तानियों के गढ़ में हिंदुओं ने पकड़ ली उसकी गर्दन, पीला झंडा फेंककर भागने की आ गई नौबत

लंदन (एजेंसी)। कनाडा में खालिस्तानियों के गढ़ में ही खालिस्तानियों की गर्दन पकड़ी गई है। खालिस्तानियों के सामने भारतीय शेर उतर गए और उन्हें खदेड़ दिया। हालत ये हो गई कि खालिस्तानियों को अपने पीले झंडे छोड़कर भागना पड़ा। एक बड़ी साजिश के तहत कनाडा के खालिस्तानी मंदिर के सामने प्रदर्शन करने पहुंचे। ये प्रदर्शन कनाडा के सरे शहर में लक्ष्मी नारायण मंदिर के बाहर हो रहे थे। खालिस्तानी भारत को लेकर बुरा-भला कह रहे थे और मंदिर पर हमले की धमकियां भी दे रहे थे। लेकिन तभी वहां हिंदू भक्तों का एक समूह पहुंच गया। इन हिंदुओं ने बड़ी ही शांतिपूर्ण तरीके से खालिस्तानी प्रदर्शनकारियों का विरोध करना शुरू कर दिया।

हिंदुओं की ताकत देख खालिस्तानी घबरा गए। हिंदुओं ने भारत माता की जय और खालिस्तान मुर्दाबाद के नारे लगाने शुरू कर दिए। ये सभी मंदिर के सामने चट्टान बनकर खड़े हो गए। हिंदुओं की एकता देख धीरे-धीरे सारे खालिस्तान दुम दबाकर भागते बने। सबसे हैरान तो वहां खड़ी कनाडा की पुलिस ने किया। कनाडा की पुलिस चुपचाप खालिस्तानियों का समर्थन करती रही। सड़क के एक तरफ खालिस्तानी झंडा लेकर भारत को भारत को लेकर अपशब्द कहते रहे और मानो कनाडा की पुलिस का मुंह ही सिल गया था।

कनाडा की पुलिस भले ही खालिस्तानियों का कुछ न बिगाड़ पाई हो लेकिन हिंदू मंदिर के सामने पैर जमाकर डट गए। मंदिर की रक्षा करने उतरे हिंदुओं ने कहा कि खालिस्तानी असली सिख नहीं हैं और हिंदुओं और सिखों की एकता हमेशा खालिस्तानियों पर भारी पड़ेगी। लेकिन खालिस्तानी भागने से पहले मंदिर प्रशासन को धमकी देकर भागे हैं। इन खालिस्तानियों ने कहा कि वो दोबारा आएंगे।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पीएम मोदी के सूरत आगमन से पहले 15 किमी लंबी मानव श्रृंखला बना स्वच्छता का संदेश दिया

सूरत। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 17 दिसंबर को सूरत आ रहे हैं। सूरत दौरे के दौरान पीएम मोदी एयरपोर्ट के नए टर्मिनल और डायमंड बुर्स का उदघाटन करेंगे। पीएम मोदी के आगमन से दो दिन पहले आज सूरत में 15 किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला बनाई गई। इसके जरिए क्लीन सिटी, ग्रीन सिटी और सेफ सिटी का संदेश दिया गया। मानव श्रृंखला में स्कूल-कॉलेज समेत सूरत के नागरिक भी बड़ी संख्या में शामिल हुए। जानकारी के मुताबिक सूरत शहर पुलिस और जिला शिक्षा विभाग की ओर से आज सूरत में 15 किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला का आयोजन किया गया था। इस मानव श्रृंखला के जरिए सूरत आ रहे पीएम मोदी को स्वच्छता का संदेश देने का प्रयास किया गया। सूरत शहर की 43 स्कूलें और 22 कॉलेजों के विद्यार्थियों समेत आम नागरिकों ने 15 किलोमीटर लंबी मानव श्रृंखला बनाई। यह मानव श्रृंखला सूरत के पुलिस परेड ग्राउंड से वाय जंक्शन तक और वाय जंक्शन से 64 जोगणी माता के मंदिर तक बनाई गई। इस मानव श्रृंखला में 24000 से भी ज्यादा विद्यार्थियों ने भाग लिए। फिलहाल सूरत शहर स्वच्छता के मामले में देश में दूसरे पायदान पर है। मानव श्रृंखला के जरिए नागरिकों को शहर और साफ सुथरा बनाने का संदेश दिया गया। ताकि आनेवाले समय में सूरत स्वच्छता के मामले में पहले पायदान पर पहुंच जाए। अगर स्कूली बच्चे अभी से स्वच्छता का सबक लेंगे तो आगामी दिनों में शहर की स्वच्छता में इजाफा होगा।

अवैध पब के खिलाफ साप्ताहिक निरीक्षण शुरू करें पुलिस : उच्च न्यायालय

नई दिल्ली। दिल्ली उच्च न्यायालय ने पुलिस और आबकारी विभाग को सफदरजंग एन्क्लेव में एक आवासीय क्षेत्र में अनधिकृत पब और बार चलाने व अवैध रूप से शराब परोसे जाने पर रोक लगाने के लिए साप्ताहिक निरीक्षण करने का निर्देश दिया। बृहस्पतिवार को कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मिनी पुष्करणा की पीठ ने कहा कि प्राधिकारियों को ऐसा क्यों लगता है कि पब और बार में शराब नहीं परोसी जाती। न्यायमूर्ति मनमोहन ने कहा, 'एक व्यक्ति के बार और पब संचालित करने के बावजूद शराब नहीं परोसे जाने की पुलिस धारणा से वे आश्चर्यचकित हैं। अदालत ने दिल्ली सरकार से इस मामले में पूरक हलफनामा दाखिल करने को कहा। पीठ ने कहा, आबकारी विभाग और दिल्ली पुलिस के अधिकारियों को सप्ताह में एक बार क्षेत्र का निरीक्षण करने और एक व्यापक रिपोर्ट दाखिल करने का निर्देश दिया जाता है। अदालत ने कहा कि मामले पर अगली सुनवाई फरवरी 2024 में की जाएगी। पीठ सफदरजंग एन्क्लेव के पास हुमायूंपुर गांव में बेसमेंट में संचालित अनधिकृत रेस्तरां और पब के खिलाफ कार्रवाई की मांग वाली याचिका पर सुनवाई कर रही थी।

जेल में मुख्तार अंसारी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया जाएगा, सुप्रीम कोर्ट को यूपी सरकार ने बताया

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को उत्तर प्रदेश राज्य का बयान दर्ज किया कि गैंगस्टर-राजनेता मुख्तार अंसारी की सुरक्षा जेल में उनके बेटे उमर अंसारी द्वारा 'गंभीर और आसन्न खतरे' की आशंका वाली याचिका में सुनिश्चित की जाएगी। उनके पिता का जीवन, जो वर्तमान में हत्या के आरोप में उत्तर प्रदेश की बांदा जेल में बंद हैं। न्यायमूर्ति हृषिकेश रॉय और न्यायमूर्ति संजय करोल की पीठ ने अंसारी को यूपी के बाहर की जेल में स्थानांतरित करने की याचिका पर निर्देश प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल केएम नटराज को समय दिया। अदालत ने अपने आदेश में कहा कि हिरासत में लिए गए व्यक्ति को यूपी के बाहर स्थानांतरित करने की याचिका पर और यह सुनिश्चित करने के लिए कि हिरासत में रहने के दौरान बंदी को कोई नुकसान न हो, एएसजी ने निर्देशों के लिए समय मांगा। वकील ने आश्वासन दिया कि यदि जरूरत पड़ी तो सुरक्षा में वृद्धि की जाएगी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हिरासत में रहने के दौरान बंदी को कोई नुकसान न हो। बंदी को नुकसान पहुंचाया गया है। संविधान के अनुच्छेद 32 के तहत दायर रिट याचिका में पूर्व विधायक अंसारी को उत्तर प्रदेश के बाहर किसी भी जेल में स्थानांतरित करने की मांग की गई है। उमर अंसारी की याचिका में आरोप लगाया गया है कि उनके परिवार के सदस्यों को राज्य द्वारा उत्पीड़न का निशाना बनाया गया है और उन्हें विश्वसनीय जानकारी मिली है कि उनके पिता का जीवन गंभीर खतरे में है क्योंकि बांदा जेल में उनकी हत्या करने के लिए राज्य प्रतिष्ठान के भीतर के लोगों की साजिश चल रही है।

बीएसएफ जवानों ने पाकिस्तान की सीमा से उड़ कर आए एक संदिग्ध ट्रेंड कबूतर पकड़ा, पैरों में बंधी मिली अंगूठी

नई दिल्ली। बीएसएफ जवानों ने पाकिस्तान की सीमा से उड़ कर आए एक संदिग्ध ट्रेंड कबूतर पकड़ा है। सीमा सुरक्षा बल द्वारा ग्रामीणों की सूचना पर रायथनवाला बीओपी के पास मिठड़ाऊ गांव में एक संदिग्ध प्रशिक्षित कबूतर को पकड़ने के बाद सुरक्षा और खुफिया एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। उसके पैरों में एक नंबर वाली अंगूठी बंधी हुई मिली। बीएसएफ अधिकारियों के मुताबिक, 154वीं बटालियन के सतर्क जवानों ने पाकिस्तान से अंतरराष्ट्रीय सीमा से सटे जैसलमेर में उड़कर आए प्रशिक्षित कबूतर को पकड़ लिया। सूत्रों ने बताया कि बीएसएफ ने गहन जांच के बाद कबूतर को वन विभाग को सौंप दिया. हालांकि बीएसएफ को कबूतर पर कोई संदिग्ध चिप या उपकरण नहीं मिला, लेकिन वे मामले की जांच कर रहे हैं। इस बीच, गुरुवार सुबह चौहटन उपखंड के बावड़ी कला गांव में एक ग्रामीण को खेत में एक संदिग्ध हवाई जहाज के आकार का गुब्बारा मिला, जिस पर पाकिस्तान लिखा हुआ था। चौहटन पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच कर रही है। बीएसएफ के विशेष महानिदेशक योगेश बहादुर खुरानिया ने जैसलमेर जिले के तनोट, लोंगेवाला और शाहगढ़ क्षेत्रों में सुरक्षा गतिविधियों का निरीक्षण किया। वह परिचालन स्थिति की समीक्षा करते हैं और जोधपुर में बीएसएफ फ्रंटियर मुख्यालय में द्वि-वार्षिक निरीक्षण करते हैं। खुरानिया ने एक सैनिक बैठक को संबोधित किया और उनके प्रयासों की सराहना की।

किशोरी से दुष्कर्म मामले में भाजपा विधायक रामदुलार को 25 साल की सजा, लगा 10 लाख का जुर्माना

सोनभद्र। उप्र के सोनभद्र जिले की दुद्धी विधानसभा सीट से भारतीय जनता पार्टी के विधायक रामदुलार गोंड को कोर्ट ने 25 साल के कारावास की सजा सुनाई है। एमपीएमएलए कोर्ट ने साल 2014 में हुए रेप मामले में ये सजा शुक्रवार को सुनाई है। कोर्ट की तरफ से 10 लाख रुपये का जुर्माना भी लगाया गया है। बताया गया है कि जुर्माने की राशि पीड़िता को दी जाएगी। इसके साथ ही विधायक की विधानसभा सदस्यता भी जाना तय है। गौरतलब है कि इस मामले में 12 दिसंबर को बीजेपी विधायक को दोषी ठहराया गया था। उनके खिलाफ पॉस्को और रेप के मामले में साल 2014 से मुकदमा चल रहा था। बता दें कि ये मामला साल 2014 के नवंबर माह का है। म्योरपुर थाना क्षेत्र के एक गांव निवासी शख्स ने रामदुलार गोंड पर अपनी नाबालिग बहन से प्रधान पति रहते रेप का मुकदमा दर्ज करवाया था। गोंड़ पर पीड़िता ने एक साल तक जंगल में ले जाकर दुष्कर्म करने का आरोप लगाया था। रामदुलार गोंड़ पर पीड़िता का फर्जी स्कूल सर्टिफिकेट भी बनवाने का आरोप लगा था। इस पूरे मामले में ही आज अदालत ने अपना फैसला सुनाया है।

भगवान का शुक्र हैं संसद में घुसने वाले आरोपी मुसलमान नहीं : ललन सिंह

पटना। बिहार की सत्ताधारी जदयू के अध्यक्ष ललन सिंह ने संसद में सेंधमारी की घटना को लेकर बीजेपी पर हमला किया हैं। जदयू अध्यक्ष सिंह ने कहा,संसद में सेंधमारी के आरोपी अगर मुसलमान होते, तब बीजेपी देश दुनिया में तूफान मचा देती। दरअसल, 13 दिसंबर को संसद भवन पर हुए हमले की 22वीं बरसी थी। तभी दोपहर करीब एक बजे दो युवकों ने संसद में घुसपैठ की थी। तभी एक शख्स ने जूते से निकालकर कोई पीले रंग की गैस स्प्रे कर दी। इस दौरान संसद में अफरा-तफरी मच गई। हालांकि कुछ सांसदों ने इन्हें पकड़कर सुरक्षाकर्मियों के हवाले कर दिया था। इनकी पहचान सागर (शर्मा) और मनोरंजन डी (मैसूर) के रूप में हुई। अब सिंह ने आरोपियों की पहचान को लेकर बीजेपी पर हमला बोला है। उन्होंने कहा, भगवान का शुक्र है कि 2 लोग जो संसद में घुसे थे, वे मुसलमान नहीं थे, अगर ये आरोपी मुसलमान होते तब बीजेपी देश दुनिया में तूफान मचा देती। ये लोग पूरे देश में धार्मिक उन्माद फैला देते।

करारी हार के बाद छत्तीसगढ़ में फूट... प्रभारी शैलजा पर टिकट बेचने का आरोप

-कई को नोटिस कई ने दिए अपने इस्तीफे

रायपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस पार्टी को विधानसभा के चुनाव में करारी हार मिली है। इस हार के बाद प्रदेश में कांग्रेस नेताओं के सुर बदलने शुरू हो गए हैं। वे नेता जिनका विधानसभा चुनाव 2023 में टिकट कटा या फिर वहां नेता जो चुनाव हार गए वहां अब पार्टी के बड़े नेताओं को घेरने लगे है। वहीं व्यक्तिगत आरोपों के बाद अब पार्टी ने इसतरह के नेताओं को बाहर का रास्ता दिखाना भी शुरू कर दिया है।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस के भीतर कुछ ठीक नहीं चल रहा है। ऐसा इसलिए माना जा रहा है क्योंकि पार्टी ने पिछले 15 दिनों के भीतर तीन पूर्व विधायकों को नोटिस, दो विधायक को निष्कासित, और एक कांग्रेस के दिग्गज ने इस बीच इस्तीफा दे दिया है। छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की सत्ता बदली तब सबसे पहले रामानुजगंज पूर्व विधायक ने बृहस्पत सिंह ने छत्तीसगढ़ की प्रभारी शैलजा और पूर्व उपमुख्यमंत्री सिंहदेव पर हार का ठीकरा फोड़कर व्यक्तिगत आरोप लगाया। वहीं दूसरी तरफ पूर्व विधायक विनय जायसवाल ने प्रदेश सह प्रभारी चंदन यादव पर 7 लाख रुपए लेने का गंभीर आरोप लगया है?। इसके बाद पूर्व मंत्री अग्रवाल ने पूर्व सीएम बघेल पर आरोप लगाते हुए कांग्रेस के पांच साल शासन पर सवाल खड़े करते हुए हार का ठीकरा फोड़, तब दूसरी ओर रायपुर दक्षिण से प्रत्याशी महंत राम सुंदरदास ने हार के बाद जिम्मेदारी लेकर खुद? को पार्टी से किनारे कर लिया। पार्टी में यह सब महज 10 दिनों के भीतर हुआ, जिसमें कांग्रेस ने दो पूर्व विधायक बृहस्पत सिंह और जायसवाल को 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया है।

छत्तीसगढ़ कांग्रेस पार्टी के नेता पूर्व विधायक बृहस्पत सिंह और जायसवाल वह नेता है, जिनका साल 2023 विधानसभा चुनाव में टिकट काट दिया गया था टिकट कटने से नाराज दोनों ही नेता, कांग्रेस की हार के बाद पार्टी के वरिष्ठ नेताओं पर गंभीर आरोप लगाए थे। इसमें बृहस्पत ने प्रदेश प्रभारी शैलजा पर टिकट बेचने का आरोप लगाया था। साथ ही जायसवाल ने सह प्रभारी यादव पर 7 लाख रुपए लेकर भी टिकट न देने की बात कही थी। यह बेहद गंभीर आरोप थे जिसके बाद पार्टी ने संज्ञान लेकर दोनों को तीन दिनों के अंदर अपने जवाबों पर सफाई देने का नोटिस जारी किया। नोटिस में जवाबों से संतुष्ट ना होते हुए प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने दोनों के खिलाफ 6 साल के लिए पार्टी से निष्कासन का आदेश निकाल दिया है।

बताया जा रहा है कि जैसे ही दोनों ही पूर्व विधायकों को निष्कासन की खबर लगी उसके बाद पूर्व विधायक जायसवाल के घर गोपनीय बैठक हुई। कांग्रेस के भीतर खाने से खबर यह है कि बैठक के बाद पार्टी के अंदर हलचल तेज हो गई है। निष्कासित पूर्व विधायक के घर हुई बैठक में पूर्व विधायक सिंह के साथ कई वे नेता मौजूद थे जिनका विधानसभा के चुनाव में टिकट कटा है। इसतरह पार्टी के खिलाफ जाकर इस तरह का काम करने की शिकायत भी कांग्रेस के बड़े नेताओं तक पहुंच चुकी है। हालांकि यह सब नेता क्या रणनीति बना रहे थे इसका खुलासा अभी तक नहीं किया गया है।

छत्तीसगढ़ में कांग्रेस की हार के साथ इस्तीफा का दौर शुरू हो गया है।? जहां एक तरफ अनुशासनहीनता के नाम पर नेताओं को पार्टी से बाहर किया जा रहा है। वहीं दूसरी तरफ नेता खुद इस्तीफा दे रहे हैं।? इस बीच कांग्रेस नेता राज्य मंत्री का दर्जा प्राप्त रहे दूधाधारी मठ के महंत रामसुंदर दास ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने इस्तीफा में चुनाव में उनकी सबसे ज्यादा वोटो से हार बताकर हार की जिम्मेदारी खुद पर ली और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज को इस्तीफा भेज दिया है।

खालिस्तानी आतंकी पन्नू की हत्या की साजिश : निखिल पहुंचा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। अमेरिका ने अलगाववादी नेता और खालिस्तानी आतंकवादी गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या के लिए सरकारी अधिकारी के साथ साजिश रचने के लिए निखिल गुप्ता को आरोपी बनाया है। उन्होंने अपने परिवार के माध्यम से सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया है। याचिका में उन्होंने भारत सरकार से अमेरिका की तरह प्रत्यर्पण कार्यवाही में हस्तक्षेप करने की मांग की है। बता दें कि निखिल एक भारतीय नागरिक हैं। वह वर्तमान में चेक गणराज्य के प्राग में सलाखों के पीछे हैं। रिपोर्ट सामने आई थी कि भारत सरकार पन्नू की हत्या की साजिश रच रही थी, इस साजिश को अमेरिका ने नाकाम कर दिया। यूएस का दावा है कि पन्नू की हत्या की साजिश एक भारतीय अधिकारी और निखिल गुप्ता नाम के शख्स ने रची थी। भारतीय अधिकारी को अमेरिका ने सीसी-1 नाम दिया है। इन आरोपों के जवाब में भारत सरकार 18 नवंबर को ही हाई लेवल जांच शुरू कर दी है। अमेरिका ने दावा किया है कि सीसी-1 ने पन्नू की हत्या का काम निखिल को सौंपा था। जिसके बाद निखिल ने एक हिटमैन की तलाश की, जो दरअसल अमेरिकी पुलिस का खबरी था। हत्या के लिए किलर को एक लाख अमेरिकी डॉलर (83 लाख रुपए) की रकम तय की गई थी। अमेरिकी न्याय विभाग ने बताया कि 52 वर्षीय निखिल गुप्ता एक भारतीय नागरिक हैं, इस 30 जून को चेक गणराज्य के अधिकारियों ने गिरफ्तार किया था। दरअसल, अमेरिका और चेक गणराज्य के बीच एक समझौता है, जिसमें कोई भी देश एक-दूसरे के अपराधी को गिरफ्तार कर सकते हैं। निखिल अभी जेल में हैं। अमेरिकी अदालत ने उन्हें दोषी ठहराया है।

कांग्रेस ने किया साफ, जब तक गृह मंत्री बयान नहीं देते, संसद चलने की संभावना कम

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद में सुरक्षा चूक का मामला अब राजनीतिक रूप से गंभीर होता दिखाई दे रहा है। विपक्षी दल लगातार इस मामले को लेकर गृह मंत्री अमित शाह के बयान की मांग कर रहे हैं। दोनों ही सदनों में आज जबरदस्त तरीके से हंगामा हुआ जिसके बाद सदन के कार्यवाही को स्थगित करनी पड़ी। शीतकालीन सत्र में यह लगातार दूसरा दिन था जब दोनों सदनों के कार्यवाही नहीं हो सकी। इन सब के बीच कांग्रेस ने स्पष्ट कर दिया है कि जब तक गृह मंत्री अमित शाह पूरे मामले को लेकर बयान नहीं देते, संसद चलने की संभावना बेहद ही कम है।

कांग्रेस के जयराम रमेश ने कहा कि जब तक गृह मंत्री संसद के दोनों सदनों में आकर बयान नहीं देंगे, तब तक बहुत कम संभावना है कि संसद चलेगी। उन्होंने कहा कि शीतकालीन सत्र के अभी भी 4 दिन बचे हैं। कांग्रेस अध्यक्ष और विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे, इंडिया एलायंस के सभी फ्लोर नेताओं ने राज्यसभा के अध्यक्ष को इस मांग के बारे में सूचित किया है। गृह मंत्री को आना चाहिए, सदन में बोलना चाहिए, ऐसे सवाल होंगे जिनका उन्हें जवाब देना होगा। उसके बाद सदन की कार्यवाही चल सकेगी।

कांग्रेस महासचिव केसी वेणुगोपाल ने कहा कि जो लोग राष्ट्रीय सुरक्षा की बात कर रहे हैं, उनकी हैसियत संसद सत्र बुलाने की नहीं है। संसद पर दो बार हमला हो चुका है, दोनों बार बीजेपी सत्ता में थी। भारत की जनता बेरोजगारी और महंगाई से तंग आ चुकी है। सरकार कुछ नहीं कर रही है...संसद अब मजाक बन गई है, उन्होंने इसे ऐसा बना दिया है। सीपीआई सांसद बिनॉय विश्वम ने कहा कि हम गृह मंत्री से अनुरोध करते हैं कि कृपया संसद में आएं और जो कुछ भी कहना चाहते हैं उसे संसद को बताएं। उन्हें संसद और इसके माध्यम से भारत के लोगों को स्पष्टीकरण देना चाहिए। पिछले 2 दिन से हम पूछ रहे हैं- गृह मंत्री कहां हैं...चौथे-तीसरे दिन वो बयान देते हैं, जिससे पता चलता है कि इसमें गृह मंत्री, प्रधानमंत्री और पूरी बीजेपी का हाथ है प्रकरण। इसीलिए, एक भाजपा सांसद ने इस तरह की कार्रवाई को बढ़ावा दिया, उन्हीं के पास पर वे इमारत में दाखिल हुए।

दिल्ली शराब घोटाले में मनीष सिसोदिया की जमानत की पुनर्विचार याचिका खारिज

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली शराब घोटाला मामले में पूर्व डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया की पुनर्विचार याचिका खारिज करते हुए सुप्रीम कोर्ट ने फिर जमानत देने से इनकार कर दिया। सुप्रीम कोर्ट ने जमानत ना देने के फैसले पर पुनर्विचार से इनकार कर दिया। कोर्ट ने कहा कि पुनर्विचार याचिका में कोई आधार नहीं है। जस्टिस संजीव खंड और जस्टिस एसवीएन भट्टी ने जमानत याचिका खारिज करने का 30 अक्तूबर का फैसला बरकरार रखा। बता दें, मनीष सिसोदिया की तरफ से अर्जी की दाखिल कर सुप्रीम कोर्ट द्वारा दिए गए फैसले पर दोबारा विचार करने की मांग की गई थी। सोमवार को दिल्ली की एक अदालत ने कथित आबकारी नीति घोटाले से संबंधित धनशोधन मामले में मनीष सिसोदिया की न्यायिक हिरासत 10 जनवरी, 2024 तक बढ़ा दी थी। विशेष न्यायाधीश एम.के. नागपाल ने मामले में अतिरिक्त दस्तावेज दाखिल करने की अनुमति मांगने के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) द्वारा दायर एक आवेदन पर सिसोदिया और अन्य आरोपियों से जवाब भी मांगा था। न्यायाधीश ने आरोपी व्यक्तियों को 10 जनवरी तक आवेदन पर अपना जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया है। अदालत ने ईडी को 10 जनवरी को अगली सुनवाई से पहले आरोपी व्यक्तियों को 540 पन्नों के अतिरिक्त दस्तावेजों की प्रति उपलब्ध कराने का भी निर्देश दिया है। कार्यवाही के दौरान, अदालत ने मामले में दिन-प्रतिदिन की सुनवाई के अनुरोध वाले ईडी के एक आवेदन पर सुनवाई स्थगित कर दी। न्यायाधीश ने कहा कि मामला फिलहाल दस्तावेजों की जांच के चरण में है और इस चरण के समाप्त होने तथा आरोपी व्यक्तियों के खिलाफ आरोप तय होने के बाद मुकदमा शुरू होगा।

महिला को निर्वस्त्र घुमाने के मामले पर हाईकोर्ट सख्त

- कोर्ट ने कहा, आज की दुनिया में अगर दुर्योधन, दुशासन आते हैं, तो कृष्ण बचाने नहीं आएंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। कर्नाटक में एक महिला को निर्वस्त्र कर पीटे जाने पर हाईकोर्ट ने कड़ा रुख अपनाया है। उच्च न्यायालय ने साफ कर दिया है कि यह एक असाधारण घटना है और इससे असाधारण तरीके से ही निपटा जाएगा। इस दौरान उन्होंने महाभारत का भी जिक्र कर दिया और कहा कि उस काल में भी ऐसी घटनाएं नहीं हुईं। अब तक इस मामले में 8 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है। मीडिया रिपोर्ट्स में घटना की खबरों के बाद कर्नाटक हाईकोर्ट ने स्वतः संज्ञान लिया है। साथ ही बेलगावी पुलिस प्रमुख को अगली सुनवाई में व्यक्तिगत रूप से मौजूद रहने के निर्देश दिए हैं। साथ ही पुलिस से ताजा रिपोर्ट भी मांगी गई है। कोर्ट ने कहा कि हमें पूरी जानकारियां चाहिए। इसे एक असाधारण घटना के तौर पर माना जाएगा और इसे असाधारण तरीके से ही निपटा जाएगा। कोर्ट ने कहा कि महिला को सार्वजनिक रूप से निर्वस्त्र करने जैसा अत्याचार महाभारत में भी नहीं हुआ, जब द्रोपदी का वस्त्रहरण हो रहा था तब भगवान कृष्ण उन्हें बचाने के लिए आ गए थे। कोर्ट ने कहा कि आज की दुनिया में अगर दुर्योधन, दुशासन आते हैं, तो कृष्ण मदद के लिए नहीं आएंगे। जस्टिस प्रसन्न बी वराले और जस्टिस कृष्णा एस दीक्षित ने घटना पर जमकर नाराजगी जाहिर की है और रिपोर्ट तलब की है। गौरतलब है ?कि 11 दिसंबर को एक 42 वर्षीय महिला को घर से निकालकर निर्वस्त्र किया गया था। इतना ही नहीं सार्वजनिक तौर पर उसकी परेड कराई गई और बिजली के खंभे से बांधकर पीटा गया। करीब दो घंटों तक चली इस हैवानियत के बाद पीड़िता अस्पताल पहुंच गई थी। दरअसल, पीड़ित महिला का बेटा कथित तौर पर प्रेमिका के साथ 4 दिसंबर को भाग गया था। जबकि उस युवती की 5 दिसंबर को किसी और से सगाई होनी थी।

सरोगेसी पर दिल्ली उच्च न्यायालय ने जताई चिंता, कहा- इसके लाभ से सिंगल और अविवाहित महिलाएं बाहर क्यों?

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरोगेसी को विनियमित करने वाला कानून शोषण को रोकने और भारत को किराये पर कोख देने वाला देश बनने से रोकने के लिए बनाया गया लाभकारी कानून है, दिल्ली उच्च न्यायालय ने शुक्रवार को एक जोड़े को सरोगेसी की प्रक्रिया की अनुमति देने से इनकार करते हुए कहा, जो दाता युग्मकों पर प्रतिबंध के बाद रुकी हुई थी। दंपति ने संबंधित फॉर्म जमा करके 2022 में प्रक्रिया शुरू की। अधिकारियों ने फॉर्म स्वीकार कर लिया लेकिन सरोगेसी (विनियमन) नियम, 2022 के नियम 7 के तहत फॉर्म 2 के पैराग्राफ 1 (डी) में संशोधन के लिए मार्च में जारी अधिसूचना के अनुपालन में जुलाई में प्रक्रिया रोक दी।

अपनी याचिका में दंपति ने कहा कि सरकार के पास सरोगेसी (विनियमन) अधिनियम के प्रावधानों के उल्लंघन में नियम बनाने की शक्ति नहीं है। अदालत ने कहा कि मार्च में अधिसूचना के माध्यम से लगाए गए प्रतिबंध अप्रासंगिक नहीं थे, लेकिन उनका कुछ औचित्य था। संशोधन ने एकल महिलाओं को सरोगेसी से प्रतिबंधित कर दिया और केवल विधवाओं या तलाकशुदा लोगों को इस प्रक्रिया का सहारा लेने की अनुमति दी।

इसमें कहा गया कि भारत एक विकसित देश नहीं है। आर्थिक कारणों से, कई लोग प्रभावित हो सकते हैं। पीठ ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट के निर्देश पर विधायिका द्वारा इस प्रजनन आउटसोर्सिंग पर अंकुश लगाया जाना चाहिए था। 10 अक्टूबर को सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि गर्भकालीन सरोगेसी के लिए इच्छुक जोड़े के केवल अंडे और शुक्राणु का उपयोग करने पर जोर देना प्रथम दृष्टया नियम 14 (ए) के खिलाफ है। इसमें कहा गया है कि सरोगेसी (विनियमन) नियम किसी महिला को गर्भावधि सरोगेसी का विकल्प चुनने की अनुमति देते हैं यदि उसके पास गर्भाशय नहीं है या असामान्य गर्भाशय है।

एमपी सरकार अपने विवादित फैसले पर करे पुनर्विचार : मायावती

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की सुप्रीमो मायावती ने मध्य प्रदेश में खुले स्थानों पर मांस और मछली की बिक्री पर प्रतिबंध लगाने के फैसले पर नवगठित भारतीय जनता पार्टी सरकार पर शुक्रवार को निशाना साधा और कहा इस विवादित फैसले पर पुनर्विचार करने की जरूरत है। बसपा नेत्री मायावती ने शुक्रवार को सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''मध्य प्रदेश की नवगठित भाजपा सरकार द्वारा बेरोजगारों व अन्य गरीब मेहनतकशों को रोटी-रोजी उपलब्ध कराने के जरूरी फैसला करने के बजाय, रोजगार के अभाव में मछली, अंडा, मीट आदि का खुले में स्वरोजगार करने वालों का दमन शुरू कर देना कितना उचित? इस विवादित फैसले पर पुनर्विचार जरूरी।'' उन्होंने कहा, ''मध्य प्रदेश सरकार ही नहीं बल्कि सभी सरकारों को महंगाई, गरीबी और बेरोजगारी जैसी समस्या को दूर करने के लिए पूरी तन्मयता से काम करने की जरूरत है। फिर भी इन चीजों के खुले में व्यापार करने पर इतनी ज्यादा आपत्ति है तो उन्हें उजाड़ने से पहले सरकार दुकान आवंटित करने की व्यवस्था क्यों नहीं करती?'' उल्लेखनीय है कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव ने पद की शपथ लेने के बाद अपनी पहली मंत्रिमंडल बैठक करते हुए बुधवार को खुले स्थानों पर मांस और मछली की बिक्री पर प्रतिबंध लगा दिया था। मुख्यमंत्री यादव ने कहा था कि खुले में मांस और मछली की बिक्री पर प्रतिबंध लागू करने के लिए खाद्य विभाग, पुलिस और स्थानीय शहरी निकायों द्वारा 15 से 31 दिसंबर तक एक अभियान चलाया जाएगा।

कीचड़ को कीचड़ से साफ नहीं किया जा सकता, कन्हैया कुमार ने कहा- बीजेपी को हराने के लिए उसके जैसा बनने की जरूरत नहीं

अहमदाबाद (एजेंसी)। कांग्रेस नेता कन्हैया कुमार ने कहा है कि उनकी पार्टी को भाजपा को हराने के लिए उसके जैसा बनने की कोई ज़रूरत नहीं है। कुमार ने यह भी कहा कि कांग्रेस सभी धर्मों के कल्याण में विश्वास करती है और किसी विशेष धर्म का पक्ष नहीं लेती। कुमार ने कहा कि कीचड़ से कीचड़ को साफ नहीं किया जाता है। बीजेपी को हराने के लिए हमको बीजेपी जैसी हो जाने की जरूरत नहीं है। कीचड़ को कीचड़ से साफ नहीं किया जा सकता। हमें बीजेपी को हराने के लिए बीजेपी जैसा बनने की जरूरत नहीं है। कुमार ने यह भी कहा कि कांग्रेस अपने घोषणापत्र में गारंटी पेश कर रही है और राजनीति में बदलाव ला रही है।

हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में कांग्रेस पार्टी की चुनावी हार को स्वीकार करते हुए कुमार ने कहा कि कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी के बीच कोई अंतर नहीं है, पार्टी की विफलता राहुल गांधी की विफलता है। कांग्रेस एक टेम्पलेट लेकर आई है, जिसमें देश के लोग कर देते हैं और बदले में सुविधाएं प्राप्त करते हैं। हालांकि, समय के साथ यह प्रवृत्ति गायब हो गई। कन्हैया कुमार ने कहा कि कांग्रेस पार्टी अपने घोषणापत्र में 'गारंटी' और विकल्प ला रही है, राजनीति में बदलाव ला रही है। भले ही कांग्रेस हार गई हो, लेकिन एजेंडा अभी भी हमारा है। इसके अलावा, कुमार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने राजस्थान में कन्हैया लाल घटना (उदयपुर में दो मुस्लिम व्यक्तियों द्वारा हत्या किए गए हिंदू दर्जी) की चर्चा करते हुए 450 रुपये में सिलेंडर देने की बात की थी, और यह कांग्रेस पार्टी के बाद हुआ। 500 रुपये में सिलेंडर की घोषणा की। यह कांग्रेस का एजेंडा अनावश्यक मुद्दों के बजाय काम पर ध्यान केंद्रित करना। कुमार ने कहा कि कांग्रेस लोकसभा चुनाव भी जीत सकती है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशक : सुरेश मौर्या द्वारा अष्ट विनायक ओफ़्सेट एफपी,149 प्लोट 26 खोडीयारनगर,सिद्धिविनायक मंदीर के पास , (भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक :सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

क्रांति समय

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

पीएम मोदी के स्वागत के लिए १५ किमी लंबी मानव श्रृंखला बनाई गई

१५ किमी लंबी मानव श्रृंखला का अवलोकन करते सांसद सी.आर.पाटील, गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत में १५ किमी लंबी ऐतिहासिक मानव श्रृंखला बनाई गई। जिसमें बड़ी संख्या में छात्र-छात्राओं द्वारा स्वच्छता का संदेश दिया गया। करीब ३० ब्लॉकों में मानव शृंखला बनायी गयी। पीएम नरेंद्र मोदी १७ दिसंबर को सूरत आ रहे हैं। पीएम नरेंद्र मोदी के आगमन के मौके पर स्वच्छता -स्वास्थ संबंधित विभिन्न संदेशों की तख्तियां लेकर मानव शृंखला बनायी गयी।

सूरत में 'क्लीन सिटी', 'ग्रीन सिटी' और 'सेफ सिटी' के संदेश के साथ एक अनोखी 'मानव श्रृंखला' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष और सांसद सी.आर. पाटिल, गृह राज्य मंत्री हर्ष संघवी, सूरत पुलिस आयुक्त अजय कुमार तोमर, सूरत जिला कलेक्टर आयुष ओक और सूरत नगर आयुक्त शालिनी अग्रवाल उपस्थित थे।

मानव शृंखला में शहर के ४३ स्कूल और २२ कॉलेजों के छात्र-छात्राओं ने हाथों में तिरंगे बैंड लेकर मानव शृंखला बनायी और 'क्लीन सिटी', 'ग्रीन सिटी' और 'सेफ सिटी' का संदेश दिया। कार्यक्रम स्थल पर छात्रों की सुरक्षा के साथ-साथ मोबाइल टॉयलेट, चिकित्सा एवं पेयजल सहित अन्य सुविधाएं उपलब्ध करायी गयी थी।

राज्य के गृह मंत्री हर्ष संघवी ने कहा, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत संकल्प को साकार करने के लिए आज शहर के छात्र और नागरिक बड़ी संख्या में शामिल हुए और मानव श्रृंखला बनाकर स्वच्छ भारत का संदेश दिया। १५ किलोमीटर लंबी इस मानव यात्रा में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए और एक इतिहास रच दिया। आज के सफर में हर तरफ मोदी-मोदी और स्वच्छ भारत के नारे हैं। आज भले ही बड़े लोग सार्वजनिक स्थानों पर कूड़ा फेंकते हैं, लेकिन छोटे बच्चों में स्वच्छता की लोकप्रियता देखी गई है। आज की यात्रा में शामिल बच्चों में स्वच्छ भारत की परिकल्पना को साकार करने की चाहत दिखी है। आज की इस मानव साकार यात्रा को देखकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की स्वच्छ भारत की परिकल्पना शीघ्र साकार होगी। सूरत देश का दूसरा सबसे स्वच्छ शहर है लेकिन सूरत के लोगों के साथ मिलकर हम इस लड़ाई को आगे बढ़ाएंगे।

सूरत में माता-पिता के लिए चिंता का एक मामला सामने आया

८ साल का बच्चा मौज-मस्ती करते हुए दूसरी मंजिल से गिरा, हालत गंभीर

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत में अभिभावकों को चेतावनी देने वाला एक मामला सामने आया है। वेसू इलाके में रघुवीर सिल्वर स्टोन नाम की बिल्डिंग की दूसरी मंजिल से ८ साल का बच्चा गिर गया। अवध नामक नवनिर्मित भवन में काम कर रहे मजदूर का बेटा मौज-मस्ती करते समय दूसरी मंजिल से गिर गया। तो गंभीर रूप से घायल युवक को उपचार के लिए १०८ एंबुलेंस में भर्ती कराया गया।

महिला श्रमिकों के बच्चों की शिक्षा निकटवर्ती जैन देरासर में होती है। बच्चे पढ़ाई के बाद मौज-मस्ती कर रहे थे। मौज-मस्ती के दौरान बच्चे का पैर फिसल गया और वह दूसरी मंजिल से नीचे गिर गया। १०८ में बच्चे को सिविल अस्पताल पहुंचाया गया। पता चला है कि बच्ची की हालत गंभीर है।

यह भी कहा जा रहा है कि जब माता-पिता ध्यान नहीं देते तो मौज-मस्ती कर रहे बच्चों के साथ इस तरह की त्रासदी हो जाती है। फिलहाल सिविल अस्पताल की ओर से बताया जा रहा है कि हादसे में घायल बच्चे का इलाज किया जा रहा है।हालांकि, डॉक्टरों ने बच्चे को गंभीर बताया है।

हीराबुर्स का शुभारंभ १७ को पीएम करेंगे, पुलिस ने अस्थायी अधिसूचना जारी की

ओएनजीसी ब्रिज से जीआईडीसी तक दोनों सड़कें भारी वाहनों के लिए बंद

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

हीराबुर्स का १७ दिसंबर रविवार को प्रधानमंत्री मोदी के हाथो उध्घाटन किया जायेगा। इसलिए सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए पुलिस ने अस्थायी अधिसूचना जारी की है। खासतौर पर सचिन हाईवे से हजीरा जाने वाला रास्ता सुबह ८ बजे से भारी वाहनों के लिए बंद रहेगा। भारी वाहनों की आवाजाही और पार्किंग, मुख्य सड़क और सभी निकटवर्ती लेन को पार करना प्रतिबंधित है। यह अस्थायी अधिसूचना सुबह ८ बजे से कार्यक्रम के समाप्ति तक लागु रहेगी।

सुबह ८ बजे से कार्यक्रम समाप्ति तक प्रतिबंध सभी लेन से मुख्य सड़क पार करने पर भी रोक लगाने का आदेश दिया गया

एक वैकल्पिक मार्ग

पलसाना, कडोदरा, कामरेज, कीम से बाएं सायन, वेलंजा, सायन चेक पोस्ट, ओएनजीसी चार रास्तों से हजीरा जा सकेंगे।; पलसाना-सचिन की ओर से आने वाले भारी वाहन सतवाला ब्रिज, ऊन, उधना दरवाजा, अठवागेट, अडाजण होते हुए हजीरा जा सकेंगे। हजीरा से ओएनजीसी फ्लाईओवर से सायन, कीम होते हुए पलसाना जा सकते हैं।

प्रतिबंधित क्षेत्र

ओएनजीसी ओवर ब्रिज सर्कल चौराहे से सचीन जीआईडीसी गेट नं. १ तक दोनों मार्गों पर भारी वाहनों की आवाजाही और पार्किंग करने पर प्रतिबंध रहेगा। डुमस कुवाड़ा से एसके नगर तक दोनों मार्गों पर भारी वाहनों की आवाजाही और पार्किंग के लिए प्रतिबंध रहेगा। प्रधानमंत्री के कार्यक्रम के चलते कडा पुलिस बंदोबस्त तैना किया गया है जिसमें स्थानिय और बाहरगांव से पुलिस अधिकारियों तथा पुलिस जवानों को सूरत बुलाया गया है। सूरत के स्थानिय और बाहर के मिलाकर कुल डीसीपी १२ आईपीएस ८ एसीपी १९ पीआई ११ पीएसआई १३६ पुलिस २८६३ डॉग स्क्वाड ६ बम स्क्वाड ६ हॉर्स १४ एसआरपी ४ होमगार्ड१८६१ टीआरबी ५२२ जवान बंदोबस्त में तैनात रहेंगेएए।

मिशन ८४ के तहत एशियन अफ्रीकन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के साथ हुआ एमओयू

सूरत के उद्यमियों को अफ्रीकी देशों के साथ तेजी से व्यापार करने में सक्षम बनाने के लिए हुआ एमओयू पर हस्ताक्षर : चैंबर अध्यक्ष रमेश वाघासिया

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

दक्षिण गुजरात चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा आयोजित एसजीसीसीआई ग्लोबल कनेक्ट मिशन ८४ के तहत सूरत और एशियन अफ्रीकन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के बीच पेशेवर जानकारी और व्यावसायिक पूछताछ का आदान-प्रदान के लिए एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया। ताकि दोनों देशों के उद्योगपति और व्यापारी एक-दूसरे के लिए पारस्परिक रूप से उपयोगी हो सकें। चैंबर ऑफ कॉमर्स के अध्यक्ष रमेश वघासिया और एशियन अफ्रीकन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के संस्थापक और अध्यक्ष डॉ. जी.डी. सिंह ने इस एमओयू पर हस्ताक्षर किये।

चैंबर अध्यक्ष रमेश वघासिया ने कहा कि एमओयू के बाद दोनों देशों के चैंबर ऑफ कॉमर्स के सदस्यों के बीच पेशेवर आदान-प्रदान हो सकेगा। इसके साथ ही सूरत के उद्योगपतियों और व्यापारियों के साथ-साथ एशियाई अफ्रीकी देशों के व्यापारियों को भी आवश्यक व्यावसायिक मार्गदर्शन और समर्थन मिलेगा। अफ्रीकी देशों के व्यापारियों को जिन उत्पादों की आवश्यकता होगी, उनकी जानकारी सूरत के उद्योगपतियों और व्यापारियों को दी जाएगी, ताकि वे सूरत से विभिन्न उत्पादों का निर्यात कर सकें। इस तरह निकट भविष्य में एसजीसीसीआई के मिशन ८४ के तहत ८४,००० करोड़ रुपये के निर्यात लक्ष्य को हासिल करने का लक्ष्य आपसी सहयोग होगा।

इसके अलावा इस एमओयू के मुताबिक चैंबर ऑफ कॉमर्स के मिशन ८४ प्रोजेक्ट को अफ्रीकी देशों के अन्य चैंबर्स ऑफ कॉमर्स और उससे जुड़े कारोबारियों तक पहुंचाया जाएगा। सूरत के उद्यमियों और व्यापारियों को अफ्रीकी देशों के व्यापारियों के साथ व्यापार करने में सक्षम बनाने के उद्देश्य से एशियन अफ्रीकन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किया गया है।

मिशन ८४ के तहत कुछ दिन पहले एशियन अफ्रीकन चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के कार्यकारी निदेशक एम.जे. पुरी और मुरलीपाई के साथ एक बैठक हुई, जिसमें मिशन ८४ के सीईओ परेश भट्ट ने उनके सामने एसजीसीसीआई ग्लोबल कनेक्ट मिशन ८४ परियोजना की प्रस्तुति दी और उनसे मिशन ८४ में शामिल होने का अनुरोध किया।

इस बैठक में चेंबर ऑफ कॉमर्स द्वारा एशियन अफ्रीकन चैंबर ऑफ कॉमर्स के प्रतिनिधियों को १० से १२ फरवरी २०२४ तक आयोजित होने वाली फूड एंड एग्रीटेक प्रदर्शनी के बारे में भी जानकारी दी गई। दोनों प्रतिनिधियों ने अफ्रीकी देशों में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग से जुड़े व्यवसायियों को सूरत में चैंबर ऑफ कॉमर्स की खाद्य एवं एग्रीटेक प्रदर्शनी में भाग लेने और प्रदर्शनी देखने का आश्वासन दिया।

मानव श्रृंखला के माध्यम से शहरवासियों ने स्वच्छता का संदेश दिया

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी १७ तारीख को सूरत आ रहे हैं। प्रधानमंत्री डायमंड बुर्स के उद्घाटन के साथ ही एयरपोर्ट के नए टर्मिनल का भी उद्घाटन करेंगे। फिर सूरत से पहले चरण में दिल्ली, सूरत और दुबई के लिए फ्लाइट शुरू हो रही है। भाजपा अध्यक्ष पाटिल ने सूरत हांगकांग सूरत उड़ान दो महीने के भीतर शुरूहोने की घोषणा करते हुए कहा, इन सभी चीजों से सूरत का विकास बढ़ेगा।

बीजेपी अध्यक्ष सी आर पाटिल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। जिसमें उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के सूरत आगमन को लेकर तैयारियां की जा रही हैं। सूरत शहर में डायमंड बुर्स का विकास हुआ है। जो एक सहकारी उपक्रम है । सूरत में पेंटागन से भी बड़ी बिल्डिंग बनाई गई है। इसमें ४४०० हीरा व्यापारी शामिल होने वाले हैं। १०० फीसदी बुकिंग हो चुकी है। यह एक ऐतिहासिक बात है। प्रधानमंत्री मोदी डायमंड बुर्स काउध्घाटन करने के साथ देश-दुनिया में नाम रोशन करने जा रहे हैं। सीमा शुल्क निकासी की सुविधा के लिए भी निर्देश दिए गए हैं। गुजरात से केंद्र सरकार को भी आय होगी। गुजरात की हिस्सेदारी भी बढ़ेगी और रोजगार भी बढ़ेगा। प्रधानमंत्री को दिया गया निमंत्रण स्वीकार कर लिया गया है। पिछले एक सप्ताह से सफाई अभियान शुरू किया गया है। जल निकासी लाइनों और गलियों की सफाई के लिए अभियान चलाया जा रहा है। सूरत को प्रथम स्थान दिलाने का प्रयास किया जा रहा है। आज मानव श्रृंखला के माध्यम से स्वच्छता का संदेश दिया जाता है। जिसमें २५ हजार लोग शामिल हुए। आज एक बहुत अच्छा मानव श्रृंखला कार्यक्रम सफल हुआ है।

पाटिल ने डायमंड बुर्स के शुभारंभ के साथ सूरत से दुबई और हांगकांग के लिए उड़ानें शुरूकरने की घोषणा की सांसद सी.आर. पाटिल

सरकारी नर्सिंग कॉलेज के ७ नर्सिंग छात्रों का एम्स में चयन

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

सूरत। सरकारी नर्सिंग कॉलेज, न्यू सिविल हॉस्पिटल, सूरत के सात छात्रों ने ०७ अक्टूबर, २०२३ को आयोजित राष्ट्रीय स्तर के एम्स NORCET (नर्सिंग ऑफिसर्स रिक्रूटमेंट कॉमन एलिजिबिलिटी टेस्ट) को पास कर लिया है। एम्स (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान) में चयनित छात्रों की सफलता पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि ''जिस तरह हमने कोविड के कठिन समय में न्यू सिविल में सेवा की, उसी तरह हम एम्स में भी अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभाएंगे।'' हम लोगों की सेवा के लिए सदैव तत्पर रहेंगे'' ड्यूटी पर उपस्थित होकर और व्यावहारिक ज्ञान हासिल कर एम्स की राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा उत्तीर्ण करने में सफल हुए इन छात्रों को नौकरी के साथ परीक्षा की तैयारी शुरू करने में नर्सिंग कॉलेज का उदार समर्थन मिला। ये सातों छात्र अब देश के विभिन्न राज्यों में स्थित १८ एम्स संस्थान के अस्पतालों में काम करेंगे।

नर्सिंग काउंसिल के उपाध्यक्ष इकबाल कड़ीवाला ने कहा, सूरत शहर अब राज्य में चिकित्सा क्षेत्र में नर्सिंग में करियर बनाने में अग्रणी बन रहा है। अब तक गुजरात से ३०० से ज्यादा छात्र देशभर के एम्स में नर्सिंग ऑफिसर के पद पर चयनित हो चुके हैं। २०१४ के बाद देश में एम्स की संख्या में वृद्धि के साथ, नर्सिंग ऑफिसर के रूप में सीधी भर्ती की जा रही है।

NORCET परीक्षा में चयनित सूरत के छात्रों में से सात छात्रों ने बिना किसी प्रकार की कोचिंग लिए परीक्षा उत्तीर्ण की है। उन्होंने कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि सूरत के सरकारी नर्सिंग कॉलेज की ७ छात्राओं में से ६ बेटियों का चयन एम्स में नर्सिंग ऑफिसर के पद पर हुआ है, इससे महसूस होता है कि महिला सशक्तिकरण में तेजी आई है।

सरकारी नर्सिंग कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. इंद्रावती राव ने इसकी जानकारी दी और कहा कि इन छात्रों ने साबित कर दिया है कि सरकारी नर्सिंग कॉलेज की शिक्षा अन्य कॉलेजों से बेहतर है। परीक्षार्थियों को महाविद्यालय की ओर से यथासंभव सहायता एवं सहयोग दिया गया है। उन्होंने कहा कि कॉलेज स्टाफ का सदैव प्रयास रहेगा कि इस नर्सिंग कॉलेज के अधिक से अधिक विद्यार्थी सफलता हासिल कर कॉलेज व परिवार का नाम रोशन करें।

नवसारी सांसद सी.आर. पाटिल ने सूरत सरकारी नर्सिंग कॉलेज के छात्रों को एम्स (अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान) में चयनित होने पर बधाई दी और उनसे समाज सेवा और देश सेवा के लिए समर्पित होने का आह्वान किया।

सूरत हवाई अड्डे को कैबिनेट ने अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित करने को मंजूरी दी

क्रांति समय
www.krantisamay.com
www.guj.krantisamay.com
www.epaper.krantisamay.com
www.rti.krantisamay.com

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने सूरत हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित करने के प्रस्ताव को १५ दिसंबर २०२३ को मंजूरी दे दी है। १७ दिसंबर को सूरत एयरपोर्ट के नए टर्मिनल भवन के लोकार्पण से पूर्व प्रधानमंत्री ने सूरतवासियों को तोहफा दिया है।

सूरत हवाई अड्डा न केवल अंतरराष्ट्रीय यात्रियों के लिए प्रवेश द्वार बनेगा, बल्कि समृद्ध हीरा और कपड़ा उद्योगों के लिए निर्बाध निर्यात-आयात संचालन की सुविधा भी प्रदान करेगा। यह रणनीतिक कदम अभूतपूर्व आर्थिक क्षमता को उजागर करने, सूरत को अंतरराष्ट्रीय विमानन परिदृश्य में एक प्रमुख खिलाड़ी बनाने और क्षेत्र के लिए समृद्धि के एक नए युग को बढ़ावा देने का वादा करता है।

नए टर्मिनल भवन के उध्घाटन से पहल प्रधानमंत्री ने सूरतवासियों को दिया तोहफा सूरत इंटरनेशनल एयरपोर्ट घोषित

भारत में तेजी से बढ़ते शहर सूरत ने उल्लेखनीय आर्थिक कौशल और औद्योगिक विकास का प्रदर्शन किया है। आर्थिक विकास को बढ़ाने, विदेशी निवेश को आकर्षित करने और राजनयिक संबंधों को मजबूत करने के लिए सूरत हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय दर्जा देना सर्वोपरि है। यात्री यातायात और कार्गो संचालन में वृद्धि के साथ, हवाई अड्डे का अंतर्राष्ट्रीय पदनाम क्षेत्रीय विकास के लिए एक महत्वपूर्ण प्रोत्साहन प्रदान करेगा।